दलित चेतना के स्वर

डॉ० घनश्याम भारती
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत

प्रथम संस्करण 2022
chapter

2021 - 2022

Kholeshwar Mahavidyalaya * Ambajogai, Dist. Beed *

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

दलित चेतना के स्वर

सम्पादक

डॉ॰ घनश्याम भारती, डॉ॰ ओकेन्द्र, डॉ॰ राकेश सिंह रावत

पीयर रिव्यू टीम

डॉ० दीपक पाण्डेय, सहायक निदेशक, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
आचार्य पं० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, प्रयागराज
डॉ० डी० आर० राहुल, प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया, मध्यप्रदेश
डॉ० शिव प्रसाद शुक्ल, प्रोफेसर हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२२

ISBN 978-93-5627-066-4

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Dalit Chetna ke Swar Edited by
Dr. Ghanshyam Bharti, Dr. Okendra, Dr. Rakesh Singh Rawat

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन : डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत ५
भूमिका : डॉ० सुशीला टाकभौरे ११

१. रांगेय राघव के उपन्यासों में दलित-स्त्री के स्वर १६
डॉ० घनश्याम भारती
२. हिंदी दलित साहित्य में दलित चेतना और संवेदना के स्वर २७
डॉ० ओकेन्द, डॉ० (सुश्री) राणी बापू लोखंडे
३. दलित चेतना और संवेदना के स्वर ६७
प्रो० डॉ० गरिमा श्रीवास्तव
४. दलित अस्मिता : एक खोज ७३
डॉ० अलका सक्सेना
५. दलित समाज की वर्तमान स्थिति ७८
डॉ० शफायत अहमद
६. समकालीन हिन्दी कविता में दलित चेतना के स्वर ८५
डॉ० यशवन्त यादव
७. सोहनपाल सुमनाक्षर के काव्य में दलित चेतना १०२
डॉ० विशु मेघनानी
८. हिन्दी गजल में दलित चेतना के स्वर १०८
डॉ० जियाउर रहमान जाफरी
९. भारतीय समाज में दलितों की दशा एवं दिशा १२४
राजकुमार पहाडे
१०. हिन्दी दलित साहित्य : 'वीमा' नाटक में दलित-विद्रोह १३२
प्रा० डॉ० बायजा कोटुळे
११. हिंदी साहित्य में दलित चेतना और डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर १३८
डॉ० अर्चना चंद्रकांतराव पल्की
१२. दलित समाज-वर्तमान स्थिति १४३
डॉ० बड्ला श्रीनिवास राव
१३. प्रेमचन्द की कहानियों में दलित चेतना १४७
डॉ० संतोष कुमार अहिरवार
१४. दलित साहित्य में दलित चेतना १५५
डॉ० लूनेश कुमार वर्मा
१५. उदय प्रकाश की कहानियों में दलित-विमर्श १६५
प्रा० दिपाली दत्तात्रय तांबे

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai
Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

१६. महिला सशक्तिकरण में डॉ० अम्बेडकर की भूमिका १७२
श्रीमती रेखा गुप्ता, डॉ० ज्योति मैवाल
१७. हिन्दी साहित्य में आख्यानमूलक प्रबन्धकाव्यों में दलित चेतना के स्वर १७६
प्रा० डॉ० गंगा एकनाथ प्रोळके शेळके
१८. संत शिरोमणि, कुलभूषण रविदास जी महाराज समता, समानता और मानवता के पैगंबर १८२
सोनू रजक
१९. सुशीला टाकभौरे के साहित्य में दलित चेतना एवं नारी संवेदना के स्वर १८५
ए० स्वाती
२०. हिन्दी लोक साहित्य : हलचल हरियाणवी के काव्य में व्यंग्य की हलचल १९०
डॉ० हरि राम
२१. दलितों की समस्याएँ : 'धरती धन न अपना' उपन्यास के संदर्भ में १९९
सौ० शितल सचिन खैरमोडे
२२. दलित चेतना : सावित्रीबाई फुले एक समाज सुधारक २०७
सुनीता प्रयाकर राव
२३. दलित साहित्य में दलित चेतना के स्वर २१३
प्रसादराव जामि
२४. 'गूंगा नही था मैं' काव्य-संग्रह में दलित चेतना २१७
सी०हेच०सुनील कुमार, प्रो०डॉ०पी०हरिराम प्रसाद
२५. डॉ० तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में दलित-चेतना २२४
कविता कोठारी
२६. शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित २३३
देवराम
२७. सामाजिक समरसता के अमर नायक संत 'रविदास' २३९
अजय सिंह रावत
२८. वीरेन्द्र जैन के उपन्यासों में जाति-भेद २४६
शेक० शाहीना बेगम
२९. प्रेमचंद की कहानियों में दलित-चेतना के स्वर २५४
पूजा शर्मा

१७

हिन्दी साहित्य में आख्यानमूलक प्रबन्धकाव्यों में दलित चेतना के स्वर

प्रा. डॉ. गंगा एकनाथ शेळके
हिंदी विभाग खोलेश्वर महाविद्यालय अंबाजोगाई
ई–मेल : gangagayke41@gmail.com

दलित चेतना का सीधा सरोकार 'मैं कौन हूँ' की संवेदना से जुड़ा होता है! चेतना का सम्बंन्ध, दृष्टि से हारा है। जो दलितों की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक छवि के तिलस्म को स्वीकार न करके उसे अधिकारों से वंचित कर सामाजिक स्तर पर पूरी शिद्दत से उसे नकार देती है। 'दलित–चेतना' एक सांस्कृतिक चेतना ही नहीं, बल्कि एक वैकल्पिक चेतना है। इसका केन्द्र बिन्दु इंसान है, जो प्रकृति कर एक नन्हा सा रुप है। प्रकृति हमेशा सृजनशील होनी चाहिए। दलित शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'दल' धातु से हुई है। संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में दलित को विनष्ट किया हुआ, मसला हुआ, मर्दित दबाया, रौंदा या कुचला हुआ माना गया है। दलित शब्द का अर्थ है– शोषित, सताया हुआ, वंचित आदिं। डॉ. श्खौराज सिंह बेचैन कहते है 'दलित' वह है, जिसे भारतीय संविधान ने अनुसूचित जाति का दर्जा दिया है।

व्यापक आशयों में दलित जन्म औरी जाति से उपर उठकर उन सारे मनुष्यों का पर्याय बन जाता है जौ उपेक्षित है, अपमान पीडित है तथा मानवोचित सहज–सुलभ अधिकारों से वंचित है। गुण और कर्म के आधार पर जिंन चतुर्वणों की सृष्टि की गयी थी, कालान्तर में वह रुढ होकर जातिगत जडता में बदल गयी। गुण और कर्म से जाति का कोई रिश्ता नहीं रह गया। यदि इसमें कुछ बचा है, कुछ शेष रहा तो

वह जातीय मिथ्या दम्भ। तभी तो मैथिलीकरण गुप्त लोगों को जगाते हुए कहते हैं–

"अपना चातुर्वर्ण्य विधान,
हे गुण – कर्म – स्वभाव प्रधान।
छोडो उँच– नीच का दम्भ
सम है हम सबका आरम्भ।"[1]

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed ★

जातीय व्यवस्था की स्वीकृति के विरोध का इतिहास बहुत पुराना है। आधुनिक काल में भारतेन्दु हों चाहे कोई अन्य कवि, सभी रचनाकारों ने जातिगत–अर्थगत विषमता से असमानता को दूर करने का अथक प्रयास किया है। स्वातन्त्र्योत्तर आख्यानमूलक प्रबन्धकाव्य भी इसके अपवाद नहीं हैं। वैसे तो कवियों ने मिथकीय चेतना को पकडकर देश और काल की अपेक्षा के अनुसार अनेक प्रबन्धकाव्यों की रचनाएँ कीं, लेकिन पौराणिक दलित पात्रों को केन्द्र में रखकर भी रचनाएँ की गयी है। यहाँ कवियों का उद्‌देश्य किसी पौराणिक पात्र की जीवनगाथा कहना नहीं रहा है वरना उसमें दलित चेतना के स्वर दिखाना है, समझाना हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर आख्यानमूलक प्रबन्धकाव्यों में दलित चेतना का विषय–प्रवर्तक हम 'अन्धा–युग' जो धर्मवीर भारती जी ने लिखा है। इसका प्रकाशन सन 1995 ई. में हुआ। उसका निम्न रुप से देखेंगे–

प्रहरी–1 और प्रहरी–2 के निम्न संवादों के माध्यम से करना चाहेंगे। संवाद निम्नतम है–

प्रहरी–1 : सूने गलियारे–सा सूना यह जीवन भी बीत गया।

प्रहरी–2 : क्योंकि हम दास थे।

प्रहरी–1 : केवल वहन करते थे। आज्ञाएँ हम अन्धे राजा की

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

प्रहरी–2 : नहीं था हमारा कोई अपना खुद का मत कोई अपना निर्णय।"[2]

'अन्धा युग' के उक्त दोनों पात्र यद्यपि भारती जी के कल्पित पात्र हैं, लेकिन इन कल्पित पात्रों के माध्यम से भारतीजी ने दास मनोवृति को आज के सन्दर्भ में दलित मनुष्य का यथार्थ स्वरुप उद्‌घाटित किया है। कहा जा चुका है कि "जिसके मानवोचित अधिकारों को छीन लिया जाये, जिन्हे सामाजिक–राजनीतिक–आर्थिक हक से हीन कर दिया जाये, निस्सन्देह वे दलित ही तो है। उनका जीवन सूना है, वे राग–रंग, श्रम–साहस, उघम–पराक्रम से हीन हैं। मत–अभिमत, निर्णय–निश्चय से रहित है, यहॉ तक कि उनका अस्तित्वबोध भी उनसे छीन लिया गया है।"[3] ऐसी स्थिति में ये प्रहरी दलित जीवन की व्याख्या के सूत्र क्यों न बने? यही तो दलित जीवन है और इन्हीं विसंगतियों–विद्रपताओं को पार कराना दलितों का जीवन है और इन्ही विसंगतियों–विद्रूपताओं को पार करना दलितों का जीवन संघर्ष है। दलित चेतना का स्वर है! आज कहने की आवश्यकता नहीं है कि मिथकीय प्रबन्धकाव्यों में कविंयो ने दलितों के अधिकारों की लडाई लडी है। वे दलितों को उनका सामाजिंक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अधिकार उसकी सम्पूर्णता में दिलवाना चाहते है, इसलिए उनके मार्ग में जो–जो अवरोध आये है। उनका अनेक तर्को सन्दर्भो, प्रमाणों, विधानों से विरोध करते आए है।

जगदीश गुप्त के 'शम्बूक' का प्रकाशन 1977 में हुआ। यह काव्य वर्तमान भाव : बोध को अभिव्यक्ति प्रदान करता हैं। "प्रबन्धकाव्य भी समाज की उन छोटी–बडी दीवारों को गिराने में सलग्न दिखायी पडते है जिनसे मनुष्य बॅटता है, मनुष्य आहत होता है। सामाजिक समता की दृष्टि से जगदीश गुप्त की 'शम्बूक' नामक रचना विशेष रुप से विचारणीय है। शम्भू का शाब्दिक अर्थ स्वयंभू है। यह शब्द अपभ्रंष है। शब्बू का अर्थ हिंदी कविता में गए कुछ दशकों में दलित विमर्श के उजाले में चेतना की नई रोशनाई से लिखी गई है। इस किताब में शम्बूक की तर्कशीलता और जाग्रत विवेक के माध्यम से कवि ने दिलत चेतना तथा मानवाधिकार से सम्बन्धित अनेक आयामो का उदघाटन

किया है। इतना ही नहीं कवि ने शम्बूक को आहत, मुक मनुजता का स्वर बनाकर प्रस्तुत किया हैं।[4] "वह राम को वर्ण भेद–पथ आपनाने पर धिक्कारता है।"[5] और शम्बूक राम से यह भी कहता है किह वर्ण से नहीं, वरन् कर्म से मनुजता का कल्याण होगा, कर्म से श्रेष्ठता का मानक होगा और उस पर सभी का समान अधिकार होगा। जैसे–

"वर्ण से होगा नहीं अब त्राण
कर्म से ही मनुज का कल्याण
जन्म से निश्चित न होगा वर्ण
वर्ण तक सीमित न होगा स्वर्ण
कर्म से ही श्रेष्ठता अधिकार
कर्म सबके लिए सम आधार।"[6]

इसी कम में शम्बूक व्यवस्था का भी प्रश्न उठाता है। वह राम से यह भी प्रश्न करता है और कामना करता है कि जो व्यवस्था व्यक्ति के सत्कर्म को अपराध मान ले, फूल को निर्बाध खिलने न दे, वर्ग सीमित हो। उस व्यवस्था के बने रहने का कोई औचित्य नहीं है–

"जो व्यवस्था
व्यक्ति के सत्कर्म को भी
मन ले अपराध
जे व्यवस्था
फूल को खिलने न दे
निर्बाध
जो व्यवस्था
वर्ग – सीमित स्वार्थ से
हो ग्रस्त
वह विषम
घातक व्यवस्था शीघ्र ही हो
अस्त।"[7]

'शम्बूक' में राजनीति तथा अर्थनीति विषयक अनेक मुद्दों से जगदीश गुप्त ने दलित चेतना के स्वर निकाले हैं। राम पर लोकनायकत्व का जो आरोपण हुआ है, उसको भी शम्बूक की तार्किकता ने स्पर्श किया है। शम्बूक ने लोकनायक के स्वरुप को राम को समझाया है, क्योंकि शम्बूक आज का जाग्रत मनुष्य है। वह अपने अधिकारों और शासकों के कर्तव्यों को भली–भाँति जानता समझता है। इसीलिए वह कहता है कि लोकनायक वह है जो संवेदना का मर्म समझे, धर्म–अधर्म और कर्म– अकर्म को जाने और सारी जनता के मानस का प्रतिरुप हो–

"लोकनायक वही जो
संवेदना का मर्म समझे
धर्म और अधर्म समझे
कर्म और अकर्म समझे
लोकनायक वही
जो विश्वास अर्जित कर सके
प्रत्येक का
और जो सारी प्रजाा के
चित्त का प्रतिरुप हो
लोकनायक वह नहीं
जो विधि–अविधि की
बात करने से डरे बस,
दण्डनायक भूप हो।"8

:

स्वातन्त्र्योत्तर आख्यानमूलक प्रबन्धकाव्य भी साहित्य की अन्य विधाओं की तरह ही दलित चेतना के स्वर दिखाई देते हैं। इन प्रबन्धकाव्यों के प्रमुख आख्यान–व्याख्यान का विषय पुरातनता का कोई पक्ष नहीं है, वरन् असका मून प्रतिपाद्य है। मनुष्य को मनुष्य समझने की सोच पैदा करना, सामाजिक एकता–मानवीय एकता–समानता की उदभावना करना है। 'अन्धायुग' के माध्यम से धर्मवीर भारती जी ने

दलित चेतना स्वर को प्रस्तृत किऐ हैं उसी प्रकार 'शम्बूक' में जगदीश गुप्तजी ने दलित चेतना के स्वरों को समझाया है। पौराणिक पात्र 'शम्बूक' के माध्यम से न्याय का महत्व बढ़ गया। दलितों को न्याय मिलता है। इस के लिए 8 सर्ग से गुजरना पड़ता है। तो 'अन्धा युग' में जब वेदना सब की भोगी है, तो जो सत्य पाया, वह अकेले मेरा कैसे हुआ। इस धरातल का मार्मिक उदाहरण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

१. मैथिलीशरण गुप्त, चातुर्वण्य हिन्दू, पृ.क. 120
२. अन्धा युग, धर्मवीर भारती, वही पृ.क. 18
३. वही पृ.क. 51
४. शम्बूक – जगदीश गुप्त वही पृ.क. 21
५. वही पृ.क. 11
६. वही पृ.क. 621
७. वही पृ.क. 451
८. वही पृ.क. 481

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

21वीं सदी का नाट्य साहित्य विविध विमर्श

संपादक

डॉ. विजय गणेशराव वाघ

Chapter 2022 2021 - 2022

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

ए. आर. पब्लिशिंग कंपनी
1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : +91 9968084132, +91 7982062594
e-mail : arpublishingco11@gmail.com

21VIN SADI KA NATYA SAHITYA : VIVIDH VIMARSH
Edited by Dr. Vijay Ganeshrao Wagh

ISBN : 978-93-88130-87-5
Critisicm

© लेखकाधीन

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : 450.00

साज-सज्जा : शेष प्रकाश शुक्ल
मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक व लेखक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed

अनुक्रम

भूमिका 11

1. 21वीं सदी का हिंदी नाट्य साहित्य 15
—डॉ. बोबडे जयंत ज्ञानोबा

2. सुनहरे सपनों के रैपर में लिपटी सड़ांधता की पेशकश 22
—डॉ. हाशमबेग मिर्जा

3. हिन्दी नाटक एवं रंगमंच की यात्रा 29
—डॉ. बी. कन्नाम्मल देवी

4. 21वीं सदी के हिन्दी बाल नाटक 33
—डॉ. कुलदीप कौर

5. बाल नाटक के तत्वों पर शकुन्तला सिरोठिया के नाटक की विशेषता 45
—श्रीविद्या पी. वी.

6. आज का समय और कंस धर्म 52
—डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी

7. आओ! तनिक प्रेम करें नाटक की मूल संवेदना 61
—प्रा. डॉ. सुभाष क्षीरसागर

8. शकील अख्तर का बाल नाटक ब्लू व्हेल : एक खतरनाक खेल 65
—डॉ. अर्शिया सैय्यद अफसर अली

9. सकुबाई और एक मामूली आदमी 69
—प्रा.नाबम यामी

10. मीराकांत के नाटकों में नारी संवेदना के विविध आयाम 76
—राहत जमाल सिद्दीकी

11. इतिहास की भूल बनीं लाखों दिलों का 'शूल अलख आजादी की' 81
—प्रा. डॉ. वीरश्री वशिष्ठजी आर्य

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

12. अभंग गाथा नाटक : नाट्यवस्तु की विवेचना 87
—डॉ. शिवानी कर्नाटक

13. 'अभंग-गाथा' नाटक में भारतीय परिवेश 94
—डॉ. नवनाथ गाड़ेकर

14. 'रति का कंगन' नाटक का मनोवैज्ञानिक पक्ष 101
—प्रा. दशरथ काशीनाथ खेमनर

15. दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में संवेदना के विविध आयाम 108
—वैशाली काशिनाथ गायकवाड

16. 21वीं सदी और हिंदी रेडियो नाटक 114
—डॉ. क्षितिजा

17. सुशील कुमार सिंह के 21वीं सदी के नाट्य-साहित्य में सामाजिक समस्याएँ 119
—प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर

18. राजनीति के अनेक पक्षों को उजागर करता नाटक : कल दिल्ली की बारी है 126
—डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ

19. 21वीं सदी के हिन्दी नाटक साहित्य में मानवीय संवेदना 133
—डॉ. एम.बी. जमादार

20. निःशक्तों की वेदना का प्रतीक : 'वीमा' नाटक 136
—प्रा. डॉ. अशोक तुकाराम जाधव

21. 'वीमा' नाटक में विकलांग की दलित संवेदना 141
—डॉ. गंगा लिंबाजी गायके

22. कुसुम कुमार कृत 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में प्रासंगिकता 145
—श्रीमती लता कुलकर्णी

23. आधुनिक हिन्दी नाटकों में मिथक चित्रण 149
—डॉ. सुजित सिंह परिहार

24. भारतीय रंगमंच, नाटक अवधारणा और थिएटर ऑफ रूट्स 154
—बी. श्रीकांत नंदकुमार

25. 21वीं सदी के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों में नई प्रवृत्तियाँ एवं रंगमंचीय प्रयोग 160
—प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके

26. 'अभंग गाथा' में सामाजिक संवेदना 165
—डॉ. रेविता बलभीम कावळे

लेखक परिचय *172*

Kholeshwar Mahavidyalaya * Ambajogai, Dist. Beed

21. 'वीमा' नाटक में विकलांग की दलित संवेदना

–डॉ. गंगा लिंबाजी गायके

नाटक का सम्बन्ध अभिनेता से होता है ओर उसकी विभिन्न अवस्थाओं की अभिव्यक्ति को नाट्य कहा गया है। नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि नाट्क को 'पंचमवेद' की संज्ञा देते हुए अपना मत प्रतिपादित करते है। "संसार में ऐसा ज्ञान, शिल्प, विधा, कला योग आदि कोई भी कर्म नहीं हैं, जो नाट्य साहित्य में प्रदर्शित नहीं किया जा सके।"[1] ऐसा भी माना जाता है कि, 'पंचमवेद' जिसका उल्लेख भरतमुनि नाटक के लिए करते हैं, जो चर्तुवर्ण अर्थात् शूद्रों के करते है, जो चतुर्वर्ण अर्थात् शूद्रों के लिए रचा गया है। नाटक में अस्मिता, संघर्ष और चेतना की त्रिवेणी प्रवाहित करना कलमनिगार का पहला धर्म है। देशकाल या संकलनत्रय (समय, स्थान, कार्य) का निर्माण अनिवार्य तत्व है। अभिनेय नाटकमें दर्पण का नहीं, दीपक का चेतना भाव निहित होता है। यह भाव दिव्यांगों के जीवन की मूल भावना है। शिक्षा, पद, विकास और पुनर्वास के साथ आज का सच उजागर होना चाहिये।

21वीं सदी के नाटक साहित्य में 'वीमा' नाटक लेखक रत्नकुमार सांभरिया ने लिखा है कि विकलांग व्यक्तिको किस तरह से अपने हाल पर जीना पडता है और उँची जात के लोग जात पांत के नाम से नीचा दिखाते हैं। इसका समग्ररुप से हमें दलित विमर्श यहां पर दिखाई देता है। नाटक का ध्येय काव्य-शास्त्रीय पध्दतियों का अनुसरण या चातुर्वर्ण्यव्यवस्था का पोषण करना नहीं है, उसे दलित शोषित समाज की संरचना को आज की परिस्थितियों में विकास के अनुरुप प्रतिपादित करना है। नाटक वह है, जिसमें रक्त-संचार की भाँति चेतना का संचार होता है। सामाजिक धरातल पर भारतीय समाज अज्ञानता, अंधविश्वास और असमानता के सिध्दांत का प्रतिनिधि रहा है। धर्मभीरुता गहरे पैठी है। विपरित इसके समतामूलक समाज की भावना और सामाजिक सद्भावना पैदा करना नाटक का मूल भाव है। विषमताओं से मुकाबला और संघर्ष के लिए तत्परता गुण-गाह्यता है। हिन्दी के

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

दलित विमर्श के सम्बंन्ध में कृष्णदत्त पालीवाल ने बहुत ही सुंन्दर टिप्पणी की है। स्त्री और शूद्र की व्यथा पर आधुनिक काल के सभी रचनाकारों ने लेखनी उठाई है। साहित्य हमारे 'मानुषभाव' की रक्षा का प्रयत्न है। जो हमें बेहतर मनुष्य बनाता है। भाव-परिष्कार करता है और मनुष्यता की उच्च भूमि पर ले जाकर खड़ा रख देता है। जो साहित्य हमें शूद्र बनाता है, लड़ाता है, भड़काता है, धर्म की आड़ में भेद-बुध्दि पैंदा करता है - वह सच्चे अर्थों में साहित्य नहीं है - प्रचार या प्रोपेगण्डा है।"[2]

'विमा' नाटक में रत्नकुमार सांभरियाजी ने जमन वर्मा के व्दारा शोषक वर्ग को ललकारा है। किस तरह जमन की विजय होती है। मानो दलित की विजय हो गई है। यह हम कथानक के रुप से पहले जानेंगे।

कथानक—घंट्टाघर से आरंभ नाटक की शुरुवात है। जमन उम्र 25 साल नेत्रहीन स्कूल में टीचर म्यूजिक है। जमन से अंधा जमन अपनी पत्नी वीमा (उम्र 23 साल) के साथ घर में बाते करता है। वीमा कुछ नहीं बोल रही इससे जमन परेशान होता है। वीमा नहीं है? कहां गई होगी इसलिए जमन घबराया हुआ श्यामाजी उम्र 60 साल नेत्रहीन संस्था के संस्थापक के पास जाता है। वहाँ पर वीमा के पिता और भाई पहले से थे। जमन अंधा है इसलिए वह श्यामाजी से बिनती करता है। मेरी पत्नी गूम हो गई है उसे ढुँढने में मेरी मदत करो। श्यामजी उसे वीमा को भूलकर अपनी जाती की लडकी से शादी करने की सलाह देते है। जमन परेशान होकर आका उम्र 52 साल निशक्तों के धनीधोरा के पास रिक्शाचालक की मदत से जाता है। वहाँ पर भी उसे निराशा ही मिलती है। अपने दोस्त देवत सिंह उम्र 27 साल जो कि निशक्त के पास चलो ऐसा रिक्शाचालक को कहता है। बिच में अपनी और वीमा की कहानी बताता है। देवत की मदत से सी.सी.झा. उम्र 35 साल मिलने जाता है, थाने में भी जाता है। आखिर में न्याय मिलता है। वीमा की जॉत उँची और जमन की जॉत छोटी ऐसा मानकर यह नाटकका कथानक चलता है।

वीमा नाटक में विकलांग की दलित संवेदना—वीमा का पती जमन जब श्यामजी के पास आता है। कल शाम से वीमा घर नहीं आई, कलेजा फटा जा रहा है, मेरा कहता है तो श्यामाजी कहते हैं "नेत्रहीन है। कहां गई होगी, तुमसे बिना पूछे? जाने दो उसे। जैसे पाई थी वैसे ही गुम हो गई। जमन - नहीं सर, नहीं। चिंता में रात सो नहीं पाया हूँ मैं संदूक पर बैठे बैठे आँखों में रात निकाल ली मैंने।"[3] वीमा की तलाश कराओ उसकी गुमशुदगी की एफ.आई.आर. दर्ज कराओ। थाना कचहरी पहुँच है आपकी। फिर भी श्यामजी शांत बैठे रहते हैं। यहाँ पर एक विकलांग की कमजोरी और उसकी जाति पर उँगलियां उठाई गई हैं। पहले जब वीमा रेल्वे

की पटरीयों नजदीक जमन को मिली उसकी जान बचाई तो यही श्यामाजी ने जमन को कहाँ था इसे तुम्हारे कंबरे में ले जाओ। वहाँ पर उसका अच्छा सा खयाल रखना और आज जब उन्हें मालूम हुआ है कि वीमा हमारे ही बिराजदारी से है तो पाटी बदलली श्यामाजीने। मदत करने के बजाए सभी जगह से अपना वजन पर इस घटना को दबाना चालता है। जमन सर जमाना खराब है। आप हमारे साया है, कृपानिधि है, दाता है, मुझ नेत्रहीन पर दया करो, प्लीज हेल्प करो मेरी। श्यामाजी - भूल जाओ वीमा को जनम - सर, मैं नौकरी को तिलांजलि दे सकता हूँ। वीमा मेरी अर्ध्दांगिनी है"4। इस तरह से वार्तालाप में श्यामाजी तलाक का कागद हस्ताक्षर के लिए सामने रखता है। वीमा के दस्तखत हो चूके है ऐसा कहते है।

जमन उदास है, उसमें चिंता है, क्रोध है, कुँठा का भाव है। आक्रोशित हुआ छडी टेकता, आँखें टिमटिमाता, एक हाथ टपटपाता रिक्शा स्टॅंड की ओर आ जाता है। मानव-वन की शहराती चहलकदमी में नेत्रहीन जमन खोसा जाता है। बाद में रिक्शावाला के मदत से आका से मिलने जाता है। वहां पर ही उसे निराशा ही मिलती है।

"जमन - मौंत छोटी है पीडा बडी है, सर। प्रेम के पौंधे पर जॉत की कुल्हाडी मार रहे हैं, आप। जो श्यामाजी कह रहे थे, वही आप कह रहे है। अजी नहीं दूँगा मैं।

आका - आँखों के ही नहीं, अक्कल के भी अँधे हो तुम, चले जाओ यहाँ से। मेरे पास जो लोगा बैठे हैं, बहुत खतरनाक हैं।"[5] थका हारा हुआ जमन फिर नैराश में रिक्शा में बैठता है। रिक्शावाला पुछता है। कहां जाना है तब दोस्त के पास चलो। रास्ता मैं बताता हूँ और उसे अपनी पूरी कहानी सुनाता है। कैसी वीमा मिली थी। वह गर्भवती है, कहां होगी, किस हाल में होगी। "देवत - थाने चल कर दोनों के विरुध्द एफ.आय.आर. दर्ज करा दें। न्याय की धारा गरीब-अमीर, नेता- नांगला, चपरासी-अफसर सबके लिए एक है।"[6] थानेदार भी सी.ओ.साहब आने वाले हैं, यहां से जल्दी चले जाओ कहता है यहां पर ही उन्हें फटकार मिलती है। देवत कहता है- लीडिंग पेपर का संवाद - दाता मेरा अजीज है। अखबार के माध्यम से श्यामाजी को रगड़वा देगा। यहां पर सच्चे दोस्त का साथ दिखाई देता है।

नेत्रहीन संस्था के संस्थापक श्यामाजी ने मुझ नेत्रहीन की नेत्रहीन गर्भवती पत्नी का अपहरण करा दिया। मुझे अध्यापक के पद से बर्खास्त कर दिया। अब जान से मारने की धमकी दी है। जमन वर्मा, पूर्व अध्यापक, नेत्रहीन संस्था।"[7] ऐसा अखबार में छापने के बजाए वीमा नाम की भोल -भाली ग्रामीण लड़की घर से रुठ कर शहर आ गई। संयोग से रेल्वे स्टेशन पर उसे नेत्रहीन संस्था का नेत्रहीन अध्यापक जमन वर्मा मिल गया। वर्मा उस बेचारी को बहला - फुसला कर अपने

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed ★
Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

करमे पर ले आया। कई दिनों तक अवैध रुप से उसे रखा और उसके साथ ज्यादती करता रहा।"[8] जमन यह सुनकर चीख कर झूठ लिखा है, सर सर सर झूठ सफेद झूठ लेकिन कोई नहीं सुनता निशक्तजन आका के दफ्तर के सामने धरना लगा देते है। जमन एक पांव पर खड़ा हो जाता है। श्यामाजी के अँगोछे को पाव के नीचे दबा लेता है। निरूशक्तों के व्दारा जोर-जोर से नारे लगाने की आवाजें आती है "देवत जब तक वीमा नहीं लाओगे, न आप (आका) अंन्दर जा सकते हैं, न आपका स्टॉफ।"[9] इस तरह दोस्त देवत, जमन का सहाला, दृष्टी बनकर उसके साथ रहता है। देवत गाँधीगिरी को माननेवाला पात्र है। शहर के ही नहीं बल्कि दूर-दराज के गाँवों के दलित लोग आ जाते है। नेत्रहीन स्कूल के स्टॉफ और स्टूडेंट्स आ गए थे धरना स्थल पर इसलिए जमन की जीत हुई। वीमा को लेकर श्यामाजी आते है।

सारांशतः वीमा निःशक्तों के जज्बात को समर्पित नाटक है। दो अँधों के परेशानियों का नाटक है। जाति भेद माननेवाले 21वीं सदी में जी रहे मानव का नाटक है। दलित लोगों को चाहे वे नेत्रहीन ही क्यों न हो लेकिन उन पर ही अन्याय अत्याचार करने वाला वर्ग इस नाटकमें दिखाई देता है। नेत्रहीन पत्नी वीमा का अपहरण एक समस्या को लेकर कथानक आगे बढ़ता है। यहां पर पुरुष विमर्श दलित, विमर्श दिखाई देता है। आज भी हमारा समाज विकलांग का भी शोषण करता हुआ दिखाई देता है। इस नाटक से हमने सीख लेनी चाहिए। जात-पांत मानकर नहीं उसके कर्म को पहचान कर उन्हें न्याय करना चाहिए और विकलांग का हमने सहारा बनना चाहिए।

संदर्भ

1. भरतमुनि नाट्यशास्त्र अध्याय एक श्लोक 15-17
2. कृष्ण दत्त पालीवाल, उत्तर आधुनिकतावाद की ओर, पृ. 139
3. वीमा नाटकरत्नकुमार सांभारिया, श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली, पृ. 15
4. वही, पृ. 17
5. वही, पृ. 28, 31
6. वही, पृ. 54
7. वही, पृ. 62
8. वही, पृ. 71
9. वही, पृ. 75

2021-22 (चॅपटर)

आधुनिक भारतीय चिंतन

डॉ. रामकिशन वसंतराव लोमटे

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed

ISBN : 978-93-91119-86-7

मूल्य : आठ सौ रुपये मात्र

पुस्तक : आधुनिक भारतीय चिंतन

सम्पादक : डॉ. रामकिशन वसंतराव लोमटे

© : सम्पादक

प्रकाशक : **वान्या पब्लिकेशंस**

3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,

कानपुर - 208 021

Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com

info@vanyapublications.com

Website : www.vanyapublications.com

Mob. : 9450889601, 7309038401

संस्करण : **प्रथम, 2022**

मूल्य : 800.00

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : सार्थक प्रेस, कानपुर

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

15. महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा तत्व : सृष्टि के वरदान — 98
डॉ. तात्या बाळाकिसन पुरी

16. गांधीवाद — 102
कृपादेवी आनंदराव पाटील

17. आज के परिपेक्ष्य में गांधी विचारों की प्रासंगिकता — 109
प्रेम चव्हाण

18. सरदार वल्लभभाई पटेल और राष्ट्रीय एकता — 114
प्रा. महेश शामराव दाडगे

19. भारत की अखंडता के लिए बलिदान - डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी — 118
डॉ. संदिप जगन्नाथ जगताप

20. जवाहरलाल नेहरू और लोकतंत्र — 123
डॉ. हनुमंत फाटक

21. भारतीय राजनीति में पंडित जवाहरलाल नेहरू का योगदान — 128
डॉ. एस. डी. पोटभरे

22. जवाहरलाल नेहरू के लोकतंत्रवादी विचार — 134
बालाजी भाऊसाहेब दळवे

23. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की न्याय की अवधारणा — 140
प्राचार्य डॉ. घुमरे एल.बी.

24. एम.एन. रॉय और लोकतांत्रिक क्रांति — 145
डॉ. हनुमंत फाटक

25. जयप्रकाश नारायण का राजनीतिक चिंतन — 155
बाबासाहेब छबुराव लहाने

26. डॉ. राममनोहर लोहिया : विचारों का परिचय... — 159
प्रा. विजय संभाजी संबेटवाड, डॉ. प्रभाकर रघुनाथ जगताप

27. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद — 168
डॉ. सुनिल पिंपळे

28. पंडित दीनदयाल उपाध्याय की अर्थनीती — 173
डॉ. पांडुरंग मारोतराव कल्याणकर

29. भारतीय बीज उद्योग के जनक पद्मभूषण डॉ. श्री बद्रीनारायण बारवाले — 183
डॉ. महेश भाऊसाहेब थोरात

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Beed ★ Ambaj

15

महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा तत्व : सृष्टि के वरदान

डॉ. तात्या बाळाकिसन पुरी

प्रस्तावना

युग पुरुष महात्मा गाधी का जन्मदिन 2 अक्तुबर जागतिक अहिंसा दिन सारे देश मे उत्साह के साथ मनाया जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी सत्य और अहिंसा के मुर्तिमत रूप थे। स्वातत्र्य आदोलन के वो अग्रदूत खादी आदोलन से एकरूप रहनेवाले और हिंदु-मुस्लिम एकता के लिए उन्होने जीवनभर प्रयास किया।

महात्मा गाधी सत्य और अहिसा के उपासक होने की वजह उन्होने जीवनभर सत्य और अहिसा प्रयोग किए। इसी वजह उन्होने अपने जीवन यात्रा को माझे सत्याचे प्रयोग यह नाम दिया। महात्मा गाधी बचपन मे आध्यत्मिक वातावरण मे पले बडे। सहिष्णुता के सस्कार उन्हे अपने घर मे मिले। राजा हरिश्चंद्र, श्रावणबाळ, वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत इसमे की व्यक्तिरेखा, भगवतगीता, हिंदूधर्म, महावीर जैन, गौतम बुध्द, सम्राट अशोक, ख्रिश्चन धर्म आदी का प्रभाव उनके जीवनपर पडा था। रस्कीन की अन टु द लास्ट से सर्वोदय, थोरो से असहकार, टॉलस्टाय की किंगडम ऑफ गॉड और गोपालकृष्ण गोखले के विचार, स्वामी परमहस, स्वामी विवेकानद इनका प्रभाव महात्मा गाधी के सनदशीर, शांती के पथ पर विश्वास, और अहिसा, श्रमप्रधान सस्कृती, स्नेह, प्रेम, सर्वधर्म समभाव आदि पर उनका दृढ विश्वास हुआ था।

महात्मा गाधी ने 1893 से 1914 तक 21 वर्ष दक्षिण अफ्रिका मे गोरे लोगो से काले लोगो पर अन्याय, अत्याचार, शोषण के विरूध्द नाताळ आफ्रीकन इंडियन कौंग्रेस मे माध्यम से सत्य और अहिसा के मार्ग सघर्ष किया। भारत मे अग्रेजी हुकूमत के विरूध्द महात्मा गाधीजी ने सत्य और अहिसा के माध्यम से असहकार, सविनय कायदेभग, उपोषण, बहिष्कार इनके माध्यम से अनेक आदोलन किए। अग्रेजी अत्याचारी साम्राज्यवादी शासक चर्चिल महात्मा गाधीजी को

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

नंगा फकीर कहकर बताया था। फिर भी गांधीजी ने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह के बलबूते पर ही अँग्रेजी, अत्याचारी साम्राज्य के विरोध लढ़ा देकर भारत देश को स्वतंत्रता मिलने के लिए सहायक बने।

मानवी इतिहास में सत्य और अहिंसा तत्वों की बढ़ोतरी हुई है, ऐसा महात्मां गांधी कहते हैं। मानव प्रथमावस्था में नरमांस भक्षक करता था। धीरे–धीरे खेत में आई फसल पर निर्भय रहने लगा। भटकी जमात से घर–परिवार के जीवन से आज की आधुनिक लोकशाही कल्याणकारी राज्य तक का प्रयास सत्य और अहिंसा इन्ही तत्वों से हुआ है। प्रारंभ में आसपास हिंसा होते हुए हमारे ऋषीमुनियों ने अहिंसा का प्रयोग किया। यह ऋषी मुनी गाँधीजी को गुरुत्वाकर्षण की खोज करनवाले न्यूटन से बड़े शास्त्रज्ञ और वेलिंटन जैसे सेनापति से शुर लढय्ये लगते हैं। दुनिया के सभी धर्म और उनके प्रेषित हमें सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हैं। आज दुनिया में अण्वस्त्र, विध्वसंक शस्त्रात्र निर्मित बढ़ते नक्षलवाद, दहशतवाद, रक्तपात, हिंसाचार, अशांतता ऐसे वातावरण में सत्य और अहिंसा जैसे तत्व होने की वजह से मानव लोक का अस्तित्व है। दुनिया में भय, डर और हँसा मुक्त रहने के लिए अखिल मानव कल्याणकारी करने के लिए सत्य और अहिंसा तत्वों का अंगिकार करने के लिए कहा है।

सत्य और अहिंसा एक सिक्के के दो पहलू है। सत्य के लिए अहिंसा, अहिंसों के लिए आत्मशुद्धी, आत्मशुद्धी के लिए ब्रम्हचार्य और इनके अस्तेय अत्यंत आवश्यक है। अहिंसा परमोधर्म इस सिख के अलावा कोई भी कार्य पूरा नहीं हो सकता। महात्मा गांधीजी ने सत्य के दो प्रकार बताए पहला साक्षेप आंशिक सत्य व दूसरा निरपेक्ष सत्य सापेक्ष सत्य व्यक्ति, जगह काल और परिस्थिति नुसार बदलते है। यह अंतिम नहीं फिर भी एक पडाव है। निरपेक्ष सत्य शाश्वत और अंतिम है। व्यक्ति के नैतिक विकार पर निरपेक्ष सत्य की प्राप्ति होती है। निरपेक्ष सत्य में ईश्वर का साक्षात्कार होता है। सत्य ही ईश्वर है, इसलिए सत्य का पालन हर परिस्थिति हर कीमत पर करना चाहिए इसलिए सदाचार, सदवर्तन और सदवचन इन तत्वों का पालन करना आवश्यक है।

अहिंसा का जिक्र सबसे पहले प्राचीन छन्दोग्योपनिषद में मिलता है। वेद, उपनिषद, गीता आदि ग्रंथ में अहिंसा तत्वों का समावेश किया है। गौतम बुध्द, वर्धमान महावीर, जैन मुनिओं ने अहिंसा तत्वों को अपनाया है। तत्वोर्थ सुत्रमें उमास्वामी कहते है, चाहे गलती से भी प्राणी हत्या होती है, वह भी हिंसा है। भगवान उसे क्षमा कर दो क्या कर रहे है यह उनको पता नही। यह वाक्य भी

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

गांधीजी के अहिंसा तत्व को चालना देता है। गांधीजी के मतानुसार मानसिक हिंसा और शारीरिक हिंसा दो प्रकार की होती है। मानसिक हिंसा द्वारा, क्रोध, लोभ, मत्सर, अहंकार, मानसन्मान इत्यादी विकार उत्पन्न होते हैं। मानसिक हिंसा का कंर्म का रूप का मतलब शारीरिक हिंसा। मन, वचन और कर्म से जो प्राणि हानी होती है वह हिंसा है।

अहिंसा का मतलब क्रोध को प्रेम से, हिंसा को अहिंसा से, अपकार को उपकार से शत्रु को मिता से जवाब देना। अहिंसा का मतलब शत्रु के सामने हार मान लेना नही। अपने खुशिओ की पर्वा किए बिना दूसरों की खुशियों का ख्याल रखना मतलब अहिंसा जीवन को मानवतावादी दृष्टिकोण से देखना अहिंसा मे अभिप्रेत है। मनुष्य के पास अहिंसा के रूप मे जो शक्ति है उससे धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, हर प्रश्न अहिंसे द्वारा छूट सकते हैं। ऐसा दावा गांधीजी ने किया है। इसलिए अहिंसा आत्मा और सत्य की शक्ति है। गांधीजी के मतानुसार सर्वव्यापी स्वरूप की है। हर कोई अहिंसा तत्व का पालन करेगा तो आदर्श मानव समाज निर्माण होगा और विश्वशांती रहेगी।

महात्मा गांधीजी ने अहिंसा के तीन प्रकार बताए वीरोकी, दुर्बल और डरे हुए की अहिंसा बताई है। वीरों की अहिंसा में मनोबल और सामर्थ्य है। कुछ लोग डर की वजह से अहिंसा को अपनाते हैं। यह अहिंसा गांधीजी को मान्य नहीं। वीरों की अहिंसा उन्हें मान्य है। अहिंसा का पालन विचार और कृति के लिए दृढ़ विश्वास होना जरूरी है।

भारतीय राजकीय आंदोलन मे चंपारण्य, साराबरी, रौलेट ॲक्ट विरोध, हिंदू-मुस्लिम ऐक्य के लिए खिलाफत ऐ आंदोलन, लोकमान्य टिळक के बाद सविनय कायदेभंग, दांडी यात्रा, भारत छोडो आंदोलन आदि आंदोलन 'अहिंसा और सत्य के भरोसे पर किए है। महात्मा गाँधी के नेतृत्व का लोगो के मन में असाधारण महत्व होने से लोगो ने उनको राष्ट्रपिता उपाधी दी। अल्बर्ट आईन स्टाईन ने कहा की महात्मा गांधी जैसा इन्सान इस भुतल पर हुआ था इसपर अगली पीढ़ी का विश्वास नहीं होगा।

सारांश– महात्मा गांधीजी ने दुनिया को सत्य और अहिंसा की देन नदी है। सत्य और अहिंसा के तत्व में द्वेष, युध्द, संघर्ष इनको जगह नहीं। धर्म, पंथ, राष्ट्रीयता इस कृत्य रोधक को पार कर दुनिया के कल्याण, सुख, प्रगति के लिए अहिंसा सर्वश्रेष्ठ बताया है। गांधी सत्य और अहिंसा का एकमेव मार्ग बताया है। गांधीजी का व्यक्तित्व और उनके तत्वों का विस्मरण आज तक हुआ नही यह विदेशी पत्रकार बर्नाड इम्हॅसलीका यह भाष्य सही है। महात्मा गांधी के सत्य आर अहिंसा तत्व को आफ्रिका जैसे देशों ने अपनाकर वर्णभेद जैसी

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Dist. Beed ★ Ambajogai

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

अमानवीय, असमानता वाली प्रथा को समाप्त कर दिया। महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा विचारों का पूरे विश्व में आज के युग में प्रभाव बढ़ा है। इ. स. 2007 मे संयुक्त राष्ट्र संघने 2 ऑक्टोबर महात्मा गांधी का जन्मदिन जागतिक अहिंसा दिन बनाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। इसलिए उनका जन्मदिन विश्व मे आंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिन के रूप मे पूरे उत्साह के साथ मनाते हैं। इस दिन शिक्षण, सामाजिक संदेश में से अहिंसा मूल्यों का सर्वस्तर पर प्रचार, किया जाता है। यह महात्मा गांधी के विचारों का विजय है। महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा तत्त्व पूरे सृष्टि के लिए वरदान हैं।

संदर्भ

1. त्यागी पी. के. भारतीय राजनितिक विचारक, विश्वभारतीय पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2006
2. महात्मा गांधी, स्वराज्य, परधाम प्रकाशन, पवनार वर्धा 2006
3. डॉ. विश्वास पाटील, सत्याग्रह गांधी, गांधी रिसर्च फाउंडेशन, जळगाव
4. अकोळकर ग.वि. गांधी विचारदर्शन खंड 18, गांधी वाङ्मय प्रकाश पुणे– 2 1963
5. चोपडेकिसन, भारतीय विचारवंत, गोमटेश प्रकाशन, परभणी
6. महात्मा गांधी, आत्मकथा (अनु.सी. पु. पटवर्धन), नवजीवन प्रकाशन मंदीर, अहमदाबाद
7. दै. लोकसत्ता, दै. सकाळ, दै. पुण्यानगरी, दै पार्श्वभुमी.

❖

15 ऑगस्ट 2021
2021
Q. 3. 3.2
Kholeshwar Mahavidyalaya Ambajogai, Dist. Beed
Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed
9
Book

जन्मभूमी तुजं नमो

प्रा. गौतम गायकवाड

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

प्रा. गौतम गायकवाड

ISBN 978-81-954923-3-6
वेदश्री प्रकाशन

जन्मभूमी तुजं नमो प्रा. गौतम गायकवाड वेदश्री प्रकाशन

- जन्मभूमी तुजं नमो
  Janmabhumi Tuj Namo
- ISBN : 978-81-954923-3-6
- लेखक : प्रा.गौतम गायकवाड
- भ्रमणध्वनी : 8007272483 / 9370911874
- प्रकाशक : विजय माळी, लातूर.
- प्रकाशन : वेदश्री प्रकाशन,
  नवीन रेणापूर नाका, लातूर,
  भ्रमणध्वनी-9371797930

- सुरक्षित हक्क : ©आदित्य गौतम गायकवाड,
  भ्रमणध्वनी - 9370911874

- मुखपृष्ठ संकल्पना : प्रा.गौतम गायकवाड
- मुखपृष्ठ : संजय जाधव, अंबाजोगाई (यौद्धा ग्राफिक्स)
- प्रथमावृत्ती : दि.१५ ऑगस्ट २०२२
- अक्षर जुळवणी : हर्षवर्धन मिलिंद मुढे,
  भीमाई नगर, साकूड रोड, अंबाजोगाई,
  जि.बीड., मो.नं.9960856560
- मुद्रक : आर्टी ऑफसेट,
  एम.आय.डी.सी.लातूर.
- किमंत (मूल्य) : 250 रू. (दोनशे पन्नास रूपये)

अनुक्रमणिका

※ अनुक्रमणिका......................................०१
०१. 'जन्मभूमी तुजं नमो' : एक कृतज्ञता (प्रस्तावना-विष्णू सगर गुरूजी)....०३
०२. आष्टा हायस्कूलचा कोहिनूर हिरा (अभिप्राय-शिवशंकर स्वामी गुरूजी).....०८
०३. होऊ कसे उतराई ! (मनोगत)...११
०४. संस्कारशील माणुसकी जपणारं गाव : आष्टा कासार..................१६
०५. भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर वाचनालयाची उभारणी..........२०
०६. मरी आई तिथं बुद्धविहार..२४
०७. आईचं घर...३०
०८. गोसावी ते बोद्धाचार्य,.. मुरली महाराज कांबळे.................३४
०९. सनई वादक धर्मा गायकवाड...३९
१०. पिंपळवृक्ष : डॉ. दत्तात्र्य गायकवाड ४३
११. मातृह्रदयी मुख्याध्यापक वसंतराव माने.............................४७
१२. पांडूरंग सोमवंशी गुरूजी...५०
१३. वसंतराव पोतदार गुरूजी...५६
१४. बसव भक्त शिवशंकर धुळव्या स्वामी गुरूजी..........................६०
१५. ज्ञानाचा सागर विष्णू शंकर सगर गुरूजी.............................६४
१६. ओम चौधरी गुरूजी...७०
१७. क्रिडा शिक्षक पाटील गुरूजी..७२
१८. आंबादास चौधरी गुरूजी..७४
१९. अणदूरचे सानेगुरूजी ७६
२०. समाजवादी बसवण्णा साथी आळंगे...................................८१
२१. हिप्परगा राष्ट्रीय शाळेचे संस्थापक : अनंतराव काका कुलकर्णी.......८५
२२. हुतात्मा बाबूराव बोरगावकर...९०
२३. दत्तात्रय चौधरी (मुन्शी)...९३
२४. पांडूरंग ऊर्फ मुरली अण्णा रामराव सोमवंशी..........................९६
२५.शरणाप्पा इरसंगप्पा आळंगे सावकाराचा वसा...........................१०१

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

डॉ. सोमनाथ रोडे

'जन्माला येतील गांधी' हा मौलिक ग्रंथ महाराष्ट्रातील घराघरात वाचला जावा अशी माझी धारणा आहे, कारण पुरोगामी महाराष्ट्रात महात्मा गांधी आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या विचार समन्वयातून प्रस्थापित व्यवस्थेला छेद देणाऱ्या नव्या क्रांतीचा उद्रेक घडून येईल, असे माझे अंत:र्मन ग्वाही देते.

परिवर्तनवादी कार्यकर्त्यांच्या मनात डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर व महात्मा गांधी यांच्यासंबंधी असलेले गैरसमजुतीचे मळभ दूर व्हावे आणि आजच्या आव्हानांना सामोरे जाणारे नवे महात्मा गांधी, नवे डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर जन्माला यावेत, या उत्कंठ तळमळीतून खऱ्या अर्थाने हा संस्मरणीय ग्रंथ साकार झाला आहे.

प्रा.गौतम गायकवाड

माझ्या खादी टोपीने... कुणाला टोपी घातली नाही. कुणाची टोपी काढून घेतली नाही. खादी टोपीने देशाला स्वातंत्र्य मिळवून दिले. देशाची लूट करणाऱ्या इंग्रजांना खादीवाल्यांनी देशातून हाकलून दिले. खादीने देश उभा केला आणि स्वकीय राज्यकर्ते खादी अंगावर घालून देश खाऊन टाकताहेत. विविध सवलतीचा, सबसिडीचा रतीब याची सवय लागून गेली... लोकशाहीत मिळून खायची, देशाच्या लुटारूंसोबत लोकही कधी सामील झाले, हे मलाही कळले नाही.

खादीवाले देश खाऊन टाकताहेत... असे ओरडून सांगणारे बुद्धिवंतही जिकडे-तिकडे गप्प केलेत. या घरच्या शत्रूला कुठे हाकलून द्यावे ? परकीय शत्रूंशी लढणे सोपे होते, घरच्या शत्रूशी कसे लढावे ?

जोपर्यंत माझ्या अंगावर खादीचा पंचा आहे. तथागताच्या अंगावर चिवर आहे आणि भारतीय संविधान आहे, तोपर्यंत देश सुरक्षित आहे.

जन्माला येतील गांधी – प्रा. गौतम गायकवाड – वेदश्री प्रकाशन

जन्माला येतील गांधी

प्रा. गौतम गायकवाड

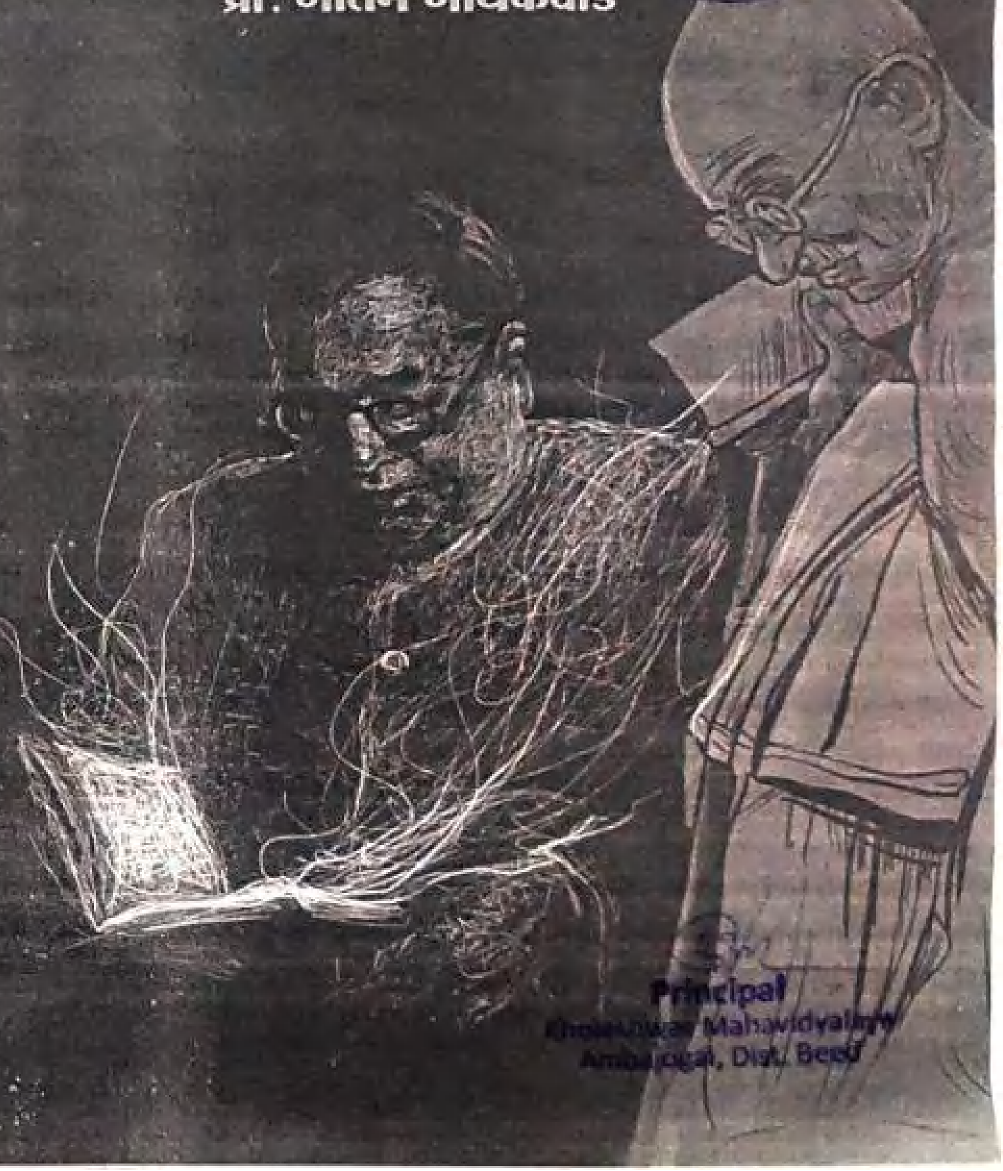

Principal
Khoalshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

- जन्माला येतील गांधी (Janmala Yetil Gandhi)
- ISBN : 978-81-954923-0-5
- लेखक : प्रा.गौतम गायकवाड
- भ्रमणध्वनी : 8007272483
- प्रकाशक : विजय माळी, लातूर.
- प्रकाशन : वेदश्री प्रकाशन,
  नवीन रेणापूर नाका, लातूर,
  भ्रमणध्वनी-9371797930

- सुरक्षित हक्क : ©आदित्य गौतम गायकवाड,
  भ्रमणध्वनी - 9370911874

- मुखपृष्ठ : श्री.शिवाजी हांडे, लातूर.
- प्रथमावृत्ती : दि. 30 जानेवारी 2022.
- अक्षर जुळवणी : हर्षवर्धन मिलिंद मुढे,
  भीमाई नगर, साकूड रोड, अंबाजोगाई,
  जि.बीड., मो.नं.9960856560
- मुद्रणशोधन : रेखा जगताप, पुणे.
- मुद्रक : आर.टी. ऑफसेट,
  एम.आय.डी.सी.लातूर.
- किमंत (मूल्य) : 200 रू. (दोनशे रूपये)

या पुस्तकातील कोणताही मजकूर पुन्हा प्रकाशित करण्यासाठी लेखकाने ज्यांना अधिकार दिले आहेत, त्यांची लेखी परवानगी घेणे बंधनकारक आहे. लेखकाने स्वतःचे व अधिकारकर्त्यांचे अधिकार राखून ठेवलेले आहेत.

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed ★

आयुष्यभर गांधी वाचले
समजून घेतले
आचरणात आणले
असे गांधी भक्त
डॉ. सोमनाथ रोडे
यांना हृदयपूर्वक अर्पण...

– गौतम

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

14. ऑक्टोबर 2022

① कमलाकर कांबळे
② शौनक शानकवाड

2022

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist Beed

उस्मानाबाद जिल्ह्यातील आंबेडकरवादी साहित्यिक

संपादक - पंडित कांबळे

अक्षय प्रकाशन, रत्नागिरी

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

■ उस्मानाबाद जिल्ह्यातील आंबेडकरवादी साहित्यिक
संपादक - पंडित कांबळे (मो.९४२१३५६८२९)
■ Osmanabad Zilhyatil Ambedkarwadi Sahitik
Editor - Pandit Kamble

■ सर्व हक्क
© लिना पंडित कांबळे
'संकल्प', सांजा रोड, शिवाजी नगर
उस्मानाबाद - ४१३५०१
मो.९४२०७६९२२९/८६६९१४४०१३

■ प्रकाशक :
डॉ.कमल दणाणे
अक्षय प्रकाशन
ओरी रोड, जाकादेवी (खालगाव) ता.जि.रत्नागिरी ४१५६२०
कोल्हापूर - द्वारा, नंदिनी शामराव दळवी सम्राट नगर उद्यान मुख्य गेटसमोर,
सम्राट नगर, कोल्हापूर. मो.९४०४७६१४२७

■ मुखपृष्ठ :
सुमित डिजिटल, उस्मानाबाद
मो. ९६०४१९९९३९

■ अक्षर जुळवणी :
नेताजी जावीर
ISBN : 978-81929214-2-8

■ मुद्रक :
शिवाई ऑफसेट, कोल्हापूर

प्रथमावृत्ती : १४ ऑक्टोबर २०२२ (धम्मचक्र प्रवर्तन दिन)

मूल्य : १९९/-

माझ्या या लेखनास
उर्जा देणारे जिल्ह्यातील
लेखक, मित्र, नातेवाईक
आणि
मराठी साहित्यक्षेत्रातील
संशोधन करणाऱ्या साहित्यिकांच्या
साहित्य सृजनतेस...

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed
Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

अंतरंग

१. दासराव शिरसाट (गुरुजी)/१८
२. भगवान भालेराव/१९
३. टी. एन. गायकवाड/२०
४. वसंत धावरे/२१
५. हिरालाल कसबे/२१
६. दे. द. जानराव/२२
७. ब्रिगेडियर डॉ.शिवाजी भालेराव/२२
८. प्रा. झुंबरलाल कांबळे/२३
९. गोरख भालेराव/२४
१०. डॉ.आर. एम. आंबेवाडीकर/२५
११. प्राचार्य शिवमूर्ती भांडेकर/२६
१२. उद्धव लोंढे/२७
१३. विजय सोनवणे/२८
१४. एस. के. शिंदे/२९
१५. वा. मा. वाघमारे/३०
१६. प्रा.पी.डी.गायकवाड/३१
१७. नामदेव ओहाळ/३२
१८. प्र. रा. सरवदे/३३
१९. भाऊराव सोमवंशी/३४
२०. योगीराज वाघमारे/३५
२१. एफ.एन.कसबे (विजयानंद)/३८
२२. मिलिंद येरमाळकर/४०
२३. प्राचार्च डॉ.डी.ए.कांबळे/४१
२४.डॉ.एस.एस.बनसोडे/४२
२५. डॉ.हरिश बनसोडे/४३
२६. शहाजी कांबळे/४३
२७. दत्तात्रय बनसोडे/४४
२८. रमेश बोर्डेकर/४५
२९. भागवत पेठे/४६
३०. प्रा. प्रल्हाद खंडाळे/४७
३१. के. व्ही. सरवदे/४८
३२. महादेव ठोंबरे/५०
३३. ना. अ. पालके/५१
३४. आशाताई लष्करे/५१
३५. दत्तात्रय गायकवाड/३५
३६. प्राचार्या डॉ.विजया इंगोले/५३
३७. राम गायकवाड/५४
३८. बाबुराव कांबळे/५५
३९. के. बी. सूर्यवंशी (गोपीनाथ)/५६
४०. तु. दा. गंगावणे/५७
४१. उद्धव कांबळे/५९
४२. डॉ.राम साबळे/५९
४३. ज्ञानेश्वर ढावरे/६०
४४. प्राचार्य डॉ.हरिष भालेराव/६२
४५. श्रीनिवास भालेराव/६३
४६. अभिमन्यू इंगळे/६३
४७. अमृत बेडगेकर/६५
४८.नागनाथ डोलारे/६५
४९.विजय सिरसट/६६
५०. दिगंबर भालेराव/६७
५१. त्रिवेणी कसबे/६८
५२. प्राचार्य डॉ.सुरेश वाघमारे/६९
५३. सुशिलाताई पटेकर/७१
५४. कमल शिंदे/७२
५५. उत्तम इर्लेकर/७२
५६. प्रा.डॉ.अर्जुन व्हटकर/७३
५७. जयराज खुने/७४
५८. सुनिल सोनवणे/७५
५९. प्रा.शिवाजी बनसोडे/७७
६०. भीमराव सरवदे/७८
६१. प्रा. शिवराम अडसुळे/७९
६२. रवींद्र शिंदे/७९
६३. डॉ.कमलाकार वाघमारे/८०
६४. पुष्पा बगाडे/८१
६५. प्राचार्य डॉ.कमलाकर कांबळे/८२
६६. वैभव काळखैर/८४
६७. डॉ. दत्तात्रय गायकवाड/८५
६८. गौतम गायकवाड (दासबंधू)/८६
६९. भारत जानराव८७
७०. शाहू पाटोळे/८७
७१. गौतम कांबळे/८८
७२. प्रा. डॉ. श्रीकांत गायकवाड/८८
७३. सुभाष द.घोडके/८९
७४. शिवाजी राठोड/९१
७५. बाबासाहेब शिंदे/९२
७६. प्रा.डॉ.दिनकर झेंडे/९३
७७. प्रा.डॉ.महादेव गायकवाड/९३
७८. प्रोफेसर डॉ.राजकुमार मस्के/९४
७९. प्रा.डॉ.अनिल कठारे/९५
८०. प्रा.गौतम गायकवाड/९६
८१. गोरोबा झेंडे/९८
८२. प्रभाकर लोंढे/९८
८३.प्रा.डॉ.बबन माग्यवंत/९९
८४. लक्ष्मण ओव्हाळ/१०१
८५. विलास कांबळे धारगावकर/१०१
८६. बिभीषण देडे/१०२
८७. प्रा.डॉ.पंडित गायकवाड/१०३
८८. अरुण कांबळे/१०४
८९. प्रा.डॉ.शेषेराव नाईकवाडे/१०४
९०. रामदास कांबळे/१०६
९१. पंडित कांबळे/१०६
९२. प्रा.डॉ.सिद्धोधन कांबळे/१०८
९३. प्रा.डॉ.दुष्यंत कटारे/१०९
९४. दिलीप गायकवाड/११०
९५. दिपक डावरे/१११
९६. प्रा.राजा जगताप/११२
९७. डॉ. रविनंद होवाळ/११३
९८. प्रा.डॉ.उद्धव भाले/११४
९९. नागसेन कांबळे/११५
१००. डॉ.रूपेशकुमार जावळे/११६
१०१. तृप्ती अंधारे/११७
१०२. प्रा.डॉ.विष्णू वाघमारे/११८
१०३. प्रा. डॉ. विकास विधाते/
१०४. भाग्यश्री केसकर/१२०
१०५. संतोष पवार/१२०
१०६. देविदास सौदागर/१२१
१०७. भक्ती वाघमारे/१२२

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

येथे झालेल्या परिषदेचे ते माजी अध्यक्ष आहेत.

त्यांनी आजपर्यंत ९६ इतिहास संशोधनपर ग्रंथ लिहिले आहेत. त्यातील ५१ ग्रंथ स्वत: लिहिले आहेत. व ३३ ग्रंथ हे सहकार्याने लिहिले आहेत. तसेच त्यांनी तीन पुस्तकांचे संपादन केले आहे. त्यांनी लिहिलेल्या 'मराठवाड्याचा इतिहास'- १९९९, पुरस्कार २००० साली मिळाला. 'शिवकाल व पेशवाईतील महारांचा इतिहास'- २००२, पुरस्कार २००२ साली मिळाला. 'भारतीय कलेचा इतिहास'- २००८, पुरस्कार २००९ साली मिळाला. 'महाराष्ट्रातील आंबेडकरी चळवळीचा इतिहास' - २०१० पुरस्कार २०११ साली मिळाला. उत्कृष्ट वाङ्मय निर्मिती म्हणून महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाकडून हे पुरस्कार देऊन त्यांचा गौरव केला आहे.

त्यांना 'महाकवी वामनदादा कर्डक पुरस्कार'- २०१० यवतमाळ, 'राजर्षी शाहू महाराज राज्यस्तरीय सन्मान पुरस्कार'- २०११, दिल्ली 'धम्मभूषण पुरस्कार' २०१२ वटफळी, यवतमाळ, 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर फेलोशिप' सन्मान २००० दिल्ली अशा एकवीस संस्थांनी पुरस्कार देऊन त्यांना गौरवान्वित केले आहे. तसेच 'कंधार तालुका रत्न' २०१३ व नांदेड जिल्हा रत्न - २०१४ हे ही पुरस्कार त्यांना मिळाले आहेत. २७ एप्रिल २०२१ रोजी कोरोनाने त्यांचे निधन झाले.

सध्याचा पत्ता : प्रा. डॉ. अनिल कठारे
महात्मा फुले, हौसिंग सोसायटी, कंधार, जि. नांदेड-४३१७१४
मो. ९४२०५३७२१४

८०. प्रा. गौतम गायकवाड

गौतम केरबा गायकवाड यांचे मुळगाव आष्टा (कासार) ता. लोहारा जि.उस्मानाबाद हे आहे. त्यांचा जन्म १५ फेब्रुवारी १९६७ रोजी झाला. त्यांचे शिक्षण त्यांच्या मूळगावी जिल्हा परिषद शाळेत इ. १ ली ते ४ थी पर्यंत झाले. माध्यमिक शिक्षण इ. ५ वी ते १० वी त्यांच्याच गावातील आष्टा हायस्कूल आष्टा येथे झाले. इ. ११ वी ते बी.ए. १९८९ कला, वाणिज्य, विज्ञान महाविद्यालय नळदुर्ग येथे पूर्ण झाले. एम. ए. १९९२ साली डॉ. बा. आं. म. वि. औरंगाबाद येथे झाले. तसेच ते नेट परीक्षा १९९१ साली उत्तीर्ण झाले आहेत.

ते २ जानेवारी १९९२ सालापासून खोलेश्वर महाविद्यालय अंबाजोगाई जि. बीड येथे मराठी विषयाचे प्राध्यापक म्हणून काम करतात. त्यांनी नोकरी करीत असताना सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, धार्मिक कार्य केलेले आहे. 'सूर्याची सावली रमाई माऊली' या नाटकाचा प्रयोग २०१० साली त्यांनी केला. डॉ. बा आं. म. वि. औरंगाबाद येथील मराठी अभ्यास मंडळावर तीन वर्षे निमंत्रित सदस्य म्हणून त्यांनी काम केले आहे. डॉ.बा.आ. वाचनालय, आष्टा, कासार यांचे हे संस्थापक आहेत. भारतीय बौद्ध महासभा तालुका शाखा संस्कार प्रमुख म्हणून तसेच डॉ.बा.आं.सार्वजनिक जयंती उत्सव समिती, अंबाजोगाई सहसचिव तसेच प्रा.

माधव मोरे प्रतिष्ठान अंबाजोगाईचे सहसचिव, व्ही. जे. आरक सेवाभावी संस्था अंबाजोगाईचे अध्यक्ष, तसेच परिवर्तन साहित्य मंडळ अंबाजोगाईचे अध्यक्ष [illegible] १७ जून २०१७ रोजी राज्यस्तरीय साहित्य संमेलन घेतले. लोकवर्गणीतून २० पुस्तकांचे प्रकाशन संमेलनात केले. मसापचे ते आजिव सदस्य आहेत. अंबाजोगाई येथे २०११ साली झालेल्या धम्मपरिषदेचे ते स्वागत अध्यक्ष होते. तर परिषदेच्या अध्यक्ष [illegible] आंबेडकर. समाजप्रबोधन, व्याख्यान मालेचे आयोजन त्यांनी करून प्रकाश आंबेडकर, प्रा. डॉ. सुखदेव थोरात, ज. वि. पवार, आनंदराज आंबेडकर या सारख्या मोठ्या वक्त्यांना निमंत्रित केले होते.

त्यांनी कार्यक्रमातून शाळा कॉलेजातून व्याख्याने दिलेली आहेत. चर्चासत्रात भाग घेतलेला आहे. अनेक वर्तमानपत्रातून त्यांचे लेख, कविता, समीक्षा, प्रासंगिक लेख प्रसिद्ध झालेले आहेत. दादासाहेब गायकवाड व्यक्ती आणि विचार या विषयावर त्यांच्या जन्मशताब्दी निमित्त दर रविवारी लेख असे नऊ महिने लेखमाला दै.एकमत मध्ये चालविली, तसेच बौद्ध धम्माचा प्रचार आणि प्रसार या विषयावरही ६ महिने दै. एकमत मध्ये लेखमाला गौतम गायकवाड यांनी चालविली आहे.

ते 'परिवर्तन संशोधन' मासिकाचे कार्यकारी संपादक म्हणून ५ वर्षापासून काम करतात. 'प्रज्ञासूर्य' मासिकाचे ते संपादक आहेत. तसेच महाविद्यालयातील ज्ञानोपासना मंडळ यशश्री अंकाचे प्रमुख म्हणून काम करतात. अनेक ग्रंथात त्यांचे लेख प्रसिद्ध आहेत. अनेक सेवाभावी संस्थांना त्यांनी अर्थसाहाय्य केले आहे. गौतम गायकवाड यांनी अनेक पुस्तकांचे लेखन केले आहे.

'माय आणि लेकरू' - २०१३ घरटं - २०१४ हे दोन्ही अनुभव कथन आहेत. 'मराठी कवितेतील नायक-नायिका' २०१३ संशोधन समीक्षा. 'सूर्यवंशीय कवितांचा आस्वाद' - २०१४ ही समीक्षा, 'हरवलेली माय एक अक्षरशिल्प' - २०१७ समिक्षा ही समिक्षेची पुस्तके प्रसिद्ध. 'हुंदके सावल्यांचे- २०१४' ललित लेख, 'वामनदादा कर्डक यांच्या गीताचा आस्वाद' -२०१५ समीक्षा 'बाबासाहेबांचे शिलेदार' - २०१५ वैचारिक, 'प्रज्ञासूर्याचे सूर्यपुत्र-२०२१' हे आंबेडकरी कार्यकर्त्यांची माहिती देणारे पुस्तक आहे. तर 'जन्मभूमी तुज नमो'-२०२२ हे त्यांच्या गावाकडील त्यांची प्रेरणादायी माणसे यात उजागर झाली आहेत. 'डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि आंबेडकरी साहित्य आकलन आणि अवलोकन'-२०२२ ही वैचारिक पुस्तके प्रकाशित झाली आहेत. तसेच 'जन्माला येतील गांधी'-२०२२ हे गद्य-पद्यात्मक पुस्तक प्रकाशित झाले आहे. 'म. बसवेश्वर आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर'- २०१८ चरित्र, 'भिमदूत व्ही.जे.आरक' - २०१७ चरित्र, 'आंबेडकर भारत' - २०१६ कविता, 'आंबेडकरी चळवळीच्या कविता'- २०१७ इ. पुस्तके प्रसिद्ध झाली आहेत. 'आंबेडकर भवन वस्तुस्थिती' - २०१६, 'निवडक एकनाथ आबुज'- २०१५, 'मराठवाड्यातील दलित कथा'- २०१२, 'तु. लि. कांबळे निवडक कथा' 'मराठी भाषा वाणिज्य व व्यवहार', 'मराठी कथाजागर', 'मराठी काव्य जागर' साहित्य सुगंध, 'वाङ्मयगंध' ही संपादित पुस्तके प्रसिद्ध आहेत. त्यांना डॉ.जगजीवनराम लेखन पुरस्कार भारत नेपाळ मैत्रीसंघ नेपाळ, काठमांडू [illegible] मे २०१४ रोजी मिळाला. प्रेरणा समीक्षा पुरस्कार, पुणे २०१७,. बहुउद्देशीय सेवा संस्था समाजभूषण पुरस्कार,

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

सोलापूर- २०१६, शरण सेवा संघ लातूर- उत्कृष्ट लेखक पुरस्कार, २०१९, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर राज्यस्तरीय पुरस्कार 'व्ही. जे. आरक' चरित्रास २०१८ साली मिळाला.

गौतम गायकवाड यांच्या जीवनावर प्रा. दिलीप सावंत नांदेड यांनी 'पिंपळवृक्ष' (प्रा. गौतम गायकवाड व्यक्ती आणि वाङ्मय) अंक प्रसिद्ध केला आहे. गौतम गायकवाड यांची 'आपलं गाव आपली माणसं' , 'ज़न्माला येईल उद्याचा गोधी' ही ललित लेखाची दोन पुस्तके प्रकाशित आहेत. तर 'माय आणि मी' 'ही ओंजळ शब्दांची', 'आंबेडकरी साहित्याच्या पाऊलखुणा', 'बौद्ध धम्माचा प्रचार प्रसार', 'खैरलांजी ते जवखेडा', 'महापुरुषांच्या कविता', 'आंबेडकरी साहित्यांचा परिचय' इ.आगामी पुस्तके लवकरच प्रकाशित होणार आहेत.

सध्याचा पत्ता : प्रा. गौतम गायकवाड
धम्मसागर, श्रीनगर कॉलनी, (पूर्व) मांडवा रोड, ता. आंबाजोगाई,
जि. बीड- ४३१५१७. मोबा. ८००७२७२४८३

८१. गोरोबा झेंडे

गोरोबा धुळा झेंडे यांचे मुळगाव खानापूर ता.जि. उस्मानाबाद असून त्यांचा जन्म ६ जून १९६७ साली झाला. त्यांचे प्राथमिक शिक्षण जि.प. प्रा. शाळा खानापूर येथे इ. १ ली ते ४ थी पर्यंत झाले. इ. ५ वी ते १० वी भारत विद्यालय उस्मानाबाद येथे झाले. इ. ११ वी १२ वी व बी.ए. १९९३ साली हे सर्व शिक्षण रा. प. महाविद्यालय उस्मानाबाद येथे झाले.

ते गुत्तेदार म्हणून काम करतात. त्यांचा 'रान-वावर'- २०१२ साली हा काव्यसंग्रह प्रकाशित झाला आहे. 'रानवावर' या काव्यसंग्रहात घर-संसार, शेत वावर अन् रस बहार या तिन्ही आयामाची पार्श्वभूमी प्राधान्यानं शेत शिवारचआहे. ती या काव्यसंग्रहात अधोरेखित झाली आहे.

सध्याचा पत्ता : गोरोबा झेंडे
कुरणे नगर, बार्शी रोड, उस्मानाबाद, जि. उस्मानाबाद (४१३५०१)
मो. ८७८८६९१०९९

८२. प्रभाकर लोंढे

प्रभाकर बाबूराव लोंढे यांचे मुळगाव आरणी ता. जि. उस्मानाबाद असून त्यांचा जन्म १० मार्च १९६८ रोजी झाला. त्यांचे प्राथमिक शिक्षण १ ली ते ६ वी त्यांच्या मूळ गावी झाले. इ. ७ वी १९८४ साली जि.प.प्रा.शा.टाका (मासुर्डी) ता.औसा जि. लातूर येथे झाले. भारत विद्यालय उस्मानाबाद येथे इ. ८ वी ते १० वी पर्यंतचे शिक्षण झाले. तेरणा महाविद्यालय उस्मानाबाद येथे ११ वी उत्तीर्ण होऊन यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ तर्फे २०१४ साली बी.ए. व २०१७ साली एम.ए. (मराठी) उत्तीर्ण झाले. तेथूनच एम.सी.जे. हा पत्रकारितेचा

डिप्लोमा पूर्ण केला. १९९२ पासून ते दैनिक गुरुधर्म, दै. संघर्ष येथे काम केले.

प्रभाकर लोंढे यांनी पत्रकारितेचा अनुभव घेतल्यावर १ जून २०१० रोजी स्वत:चे साप्ताहिक 'खडतर प्रवास' नावाचे वृत्तपत्र काढले. आजतागायत त्यांचे संपादक म्हणून नियमित हे वृत्तपत्र चालवतात. २००२ पासून त्यांनी काही काळ बाबासाहेब गोपले यांच्या 'भारतीय टायगर सेना' या संघटनेत काम केले.

काही काळानंतर त्यांनी एकनाथ आव्हाड यांच्या मार्गदर्शनाखाली न्यू भारतीय टायगर सेना काढली. ते या संघटनेचे संस्थापक अध्यक्ष आहेत. यासंघटनेत राहून त्यांनी अनेक समाज जागृतीचे उपक्रम राबविले. २००२ साली अण्णाभाऊ साठे चौक निर्मिती, १३ नोव्हेंबर २००४ रोजी लहूजी वस्ताद चौक निर्मितीमध्ये त्यांचा मौलाचा वाटा आहे. लहूजी चौकाचे १४ नोव्हेंबर २००४ रोजी तत्कालीन महाराष्ट्राचे राज्यमंत्री राणा जगजितसिंह पाटील यांच्या हस्ते उद्घाटन केले. एस.सी.,एस. टी. बहुजन समाजाच्या परिवर्तनासाठी अन्यायाविरुद्ध लढा देण्याचे काम त्यांच्या संघटनेमार्फत करीत असतात.

उस्मानाबाद शहरामध्ये अण्णाभाऊ साठे यांच्या जयंतीची मिरवणूक निघते तेव्हा निर्व्यसनी लोकांच्या मदतीने मिरवणूक यशस्वी रित्या शांततेत पार पाडल्यामुळे उस्मानाबाद जिल्हा पोलिस अधिक्षक यांच्या वतीने प्रथम क्रमांक काढून २०१० ते २०१९ पर्यंत त्यांचा सत्कार करण्यात आला. कोरोना साथीच्या काळात ३.५० लाख रुपयाचे धान्य किट संघटनेच्या वतीने कलेक्टर कडून मिळवून कार्ड नसलेल्या लोकांना धान्य पुरवठा करण्यात त्यांचे योगदान राहिले आहे.

त्यांच्या 'सा. खडतर प्रवासामध्ये' सातत्याने त्यांनी वैचारिक लेखन केले आहे. म. फुले, संत तुकाराम महाराज यांच्या विचारावर त्यांनी चाळीस, पन्नास भागाची लेखनमाला चालविली आहे. उत्तम कांबळे यांच्या 'देवदासी नग्न पूजा' या संशोधनावर आधारित त्यांनी काही लेख लिहिले आहेत. त्यांनी १९८५ ते २००० च्या काळात १५ वर्षे पाव विकून शिक्षण पूर्ण केले आहे. गरीबाचे चटके त्यांनी भोगल्यामुळे त्यांना दुःखाची जाणीव आहे. या जाणीवेतून त्यांनी 'लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे: एक सम्यक आकलन'- २००६ हे वैचारिक पुस्तक लिहिले आहे. ते समाज परिवर्तनासाठी व्यसनमुक्तीसाठी समाज कार्य करीत राहण्याचा त्यांचा संकल्प आहे.

सध्याचा पत्ता : प्रभाकर लोंढे
अण्णाभाऊ साठे चौक, आडत लाईन समोर
उस्मानाबाद - ४१३५०१, मोबा. ९८५००३४५७९

Principal
...ar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

८३.प्रा. डॉ. बबन भाग्यवंत

बबन जयवंतराव भाग्यवंत यांचे मूळगाव मरडसगाव, ता. पाथरी, जि.परभणी. त्यांचा जन्म २५ एप्रिल १९६८ रोजी झाला. त्यांचे प्राथमिक शिक्षण इ. १ ली ते ४ थी त्यांच्या गावीच मरडसगाव येथील जिल्हा परिषदेच्या शाळेतून झाले. इयत्ता ५ वी ते ७ वी जि. प. प्रा. शाळा पाथरगव्हाण, ता. पाथरी जि. परभणी येथून झाले. तर इ. ८ वी ते १० वी

प्राचीन भारताच्या जडणघडणीचे शिल्पकार तथागत गौतम बुध्द आणि आधुनिक भारताच्या जडणघडणीचे शिल्पकार डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आहेत. बाबासाहेब काळाचे नाव, परिवर्तनाची ठेव आणि भविष्याचा वेध आहेत. बाबासाहेबांनी भारताचे वैचारिक दारिद्र्य घालविले. त्यांचे आर्थिक प्रश्नासंबंधीचे, शेतीचे, पाणीप्रश्नाचे, हिंदू कोडबील, बुध्दधम्म आणि भारतीय संविधानातील विचार अमलात आणून तशी कृती केली तर भारत महासत्ता होईल. त्याहीपेक्षा भारतास पुन्हा सुवर्णयुगाचा काळ येईल. भरत देश बुध्द-प्रबुध्दामुळेच जगात ओळखला जातो. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे जगातील सर्वज्ञ ज्ञानाचे प्रतिक आहेत. त्यांच्या ज्ञानापुढे जग नतमस्तक होते. ते ज्ञानाचे ज्ञानभांडार, ज्ञानपीठ, ज्ञानाचे विद्यापीठ होते. आज जगात त्यांच्या ग्रंथांची पारायणे होत आहेत. लोक बाबासाहेबांचे ग्रंथ प्रचंड वाचताहेत. त्यांच्या ग्रंथाला प्रचंड मागणी आहे. लोकांना कळून चुकले आहे की, बुध्द-फुले-शाहू-आंबेडकर वाचलेच पाहिजेत. ते वाचले तर आपण वाचू, नव्हे वाचल्याशिवाय वाचणारच नाहीत. जगात बाबासाहेबांवर लाखो गाणी, गीते आणि ग्रंथ लिहिले जाताहेत. त्यांच्या ग्रंथावर जगात सर्वाधिक भाष्य होत आहे. जगात एवढे भाग्य कोणत्याही महापुरूषाला लाभले असेल असे वाटत नाही. एक बाबासाहेब वाचले तर हजारो बाबासाहेब निर्माण झाले. लाखो लोक बाबासाहेबांचे अनुयायी आहेत. बाबासाहेबांचे अनुयायी प्रचंड वाचन करताहेत. इतके वाचन वाढविले की त्यांनी पुस्तके महाग केली. बाबासाहेबांनी शिका म्हटले, लाखो लोक शिकले; ज्ञानीवंत व शहाणे झाले. आजही त्यांचे ग्रंथ वाचले जाताहेत. दीक्षाभूमी, सहा डिसेंबर चैत्यभूमी, एक जानेवारी भीमा कोरेगाव, चौदा जानेवारी विद्यापीठ नामविस्तार दिन आदी विविध समारंभात, परिषदेत, कार्यक्रमांच्या वेळी लाखो रूपयांची पुस्तके विकली जाताहेत. हे वाचनाचे व्यसन लाखो लोकांना त्यांनी लावले. वाचनाचा वारसा त्यांच्या अनुयायांनी चालू ठेवला आहे. कोट्यावधी लोक बाबासाहेबांच्या पुस्तकांचे वाचक आहेत. जगात बाबासाहेबाचे अनुयायी अधिक पुस्तके घेतात आणि वाचतात. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांनी संपूर्ण आयुष्य ज्ञानाची भूक शमविण्यासाठी आणि वाचनासाठी घालविले. त्यांनी पुस्तकांवर प्रचंड प्रेम केले.

- पुस्तकातून

वेदश्री प्रकाशन

9788195492312

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि आंबेडकरी साहित्य (आकलन आणि अवलोकन) - प्रा. गौतम गायकवाड ❊ वेदश्री प्रकाशन

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि आंबेडकरी साहित्य

(आकलन आणि अवलोकन)

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

प्रा. गौतम गायकवाड

• डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि आंबेडकरी साहित्य
(आकलन आणि अवलोकन)
Dr. Babasaheb Ambedkar aani Ambedkari sahitya
(Aakalan aani Avlokan)

• ISBN : 978-81-954923-1-2

• लेखक : प्रा.गौतम गायकवाड

• भ्रमणध्वनी : 8007272483

• प्रकाशक : विजय माळी, लातूर.

• प्रकाशन : वेदश्री प्रकाशन,
नवीन रेणापूर नाका, लातूर,
भ्रमणध्वनी-9371797930

• सुरक्षित हक्क : ©आदित्य गौतम गायकवाड,
भ्रमणध्वनी - 9370911874

• मुखपृष्ठ संकल्पना : प्रा.गौतम गायकवाड

• प्रथमावृत्ती : दि. 30 जानेवारी 2022.

• अक्षर जुळवणी : हर्षवर्धन मिलिंद मुढे,
भीमाई नगर, साकूड रोड, अंबाजोगाई,
जि.बीड., मो.नं.9960856560

• मुद्रणशोधन : रेखा जगताप, पुणे.

• मुद्रक : आर.टी. ऑफसेट,
एम.आय.डी.सी.लातूर.

• किमंत (मूल्य) : 200 रू. (दोनशे रूपये)

Mahavidyalaya Ambajogai, Dist. Beed

आंबेडकरी चळवळीशी
विचारांशी, घराण्याशी
एकनिष्ठ राहिलेले
व्यक्तिमत्व
स्मृतिशेष
प्रा.अविनाश डोळस
यांना कृतज्ञतापूर्वक
अर्पण...

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

26 जानेवारी 2022
Chapter

21-22

भारताचे संविधान

उद्देशिका

आम्ही, भारताचे लोक, भारताचे एक सार्वभौम समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकशाही गणराज्य घडवण्याचा व त्याच्या सर्व नागरिकांस :

सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक **न्याय** ;
विचार, अभिव्यक्ती, विश्वास, श्रद्धा
व उपासना यांचे **स्वातंत्र्य** ;
दर्जाची व संधीची **समानता** ;
निश्चितपणे प्राप्त करून देण्याचा
आणि त्या सर्वांमध्ये व्यक्तीची प्रतिष्ठा
व राष्ट्राची एकता आणि एकात्मता
यांचे आश्वासन देणारी **बंधुता**
प्रवर्धित करण्याचा संकल्पपूर्वक निर्धार करून ;

आमच्या संविधानसभेत
आज दिनांक २६ नोव्हेंबर, १९४९ रोजी
याद्वारे हे संविधान अंगीकृत आणि अधिनियमित करून स्वत:प्रत अर्पण करीत आहोत.

गुरुमाऊली प्रकाशन, उदगीर
ISBN - 978-81-955116-4-8

अमृतमंथन : भारतीय स्वातंत्र्याची ७५ वर्ष   संपादक : डॉ. भुजंग विठ्ठलराव पाटील

अमृतमंथन
भारतीय स्वातंत्र्याची ७५ वर्ष

Kholeshwar Mahavidyalaya, Ambajogai, Dist. Beed

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

संपादक
डॉ. भुजंग विठ्ठलराव पाटील

• **प्रकाशक** । गोविंद मुक्कनवार
गुरुमाऊली प्रकाशन,
विकास नगर, एल.आय.सी.
कार्यालयाच्या पाठीमागे, उदगीर
जि. लातूर - ४१३५१७
मो. ९६२३१२७६२९
gurumauliudgir01@gmail.com

• © डॉ. भुजंग विठ्ठलराव पाटील
स्वामीविवेकानंद महाविद्यालय, शिरूर ताजबंद ता. अहम
जि. लातूर

• **मुखपृष्ठ चंद्रकांत मादळे**
• **प्रथमावृत्ती** । २६ जानेवारी २०२२
• **किमत** : २००/-
• **ISBN** : 978-81-955116-4-8

टीप : सदरील पुस्तकातील लेखात व्यक्त झालेल्या मतांशी संपाद
सहमत असतीलच असे नाही.

❖ अर्पणत्रिका ❖

भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील
ज्ञात-अज्ञातास श्रद्धापूर्वक अर्पण...

❖ अनुक्रमणिका ❖

अ) स्वातंत्र्योत्तर काळातील राजकीय स्थित्यंतरे

१. भारतीय संविधान : स्वातंत्र्य आंदोलनाचे अपत्य — [illegible]
- प्रा.डॉ.प्रभाकर गणपतराव जाधव

२. स्वातंत्र्य चळवळीच्या पार्श्वभूमीतून उगम पावलेले राष्ट्रीय व वैचारिक नेतृत्व : यशवंतराव चव्हाण — [illegible]
- प्रा. डॉ. पंडित महादेव लावंड

३. केंद्र - राज्य संबंधातील वित्त आयोगाची भूमिका (विशेष संदर्भ १५ वा वित्त आयोग) — [illegible]
- प्रा डॉ. विष्णूकांत पंडितराव शेळके

४. एकविसावे शतक आणि गांधीवाद : एक चिंतन — [illegible]
- प्रा. डॉ. भुजंग विठ्ठलराव पाटील.

५. भारतीय राजकारणातील प्रभावशाली स्त्री : के. आर. गौरी अम्मा - प्रा. डॉ. रजनी अ. बोराळे. — [illegible]

६. भारतीय राजकारणातील महिलांचे योगदान — [illegible]
- प्रा. डॉ. शाम भागवत शिंदे.

ब) साहित्य व संस्कृती

१. महाराष्ट्र, कर्नाटक सीमावर्ती भागातील लोकगीतांमधील शब्द वैभव - श्रीमती सुनिता काळे — [illegible]

२. भारतीय स्वातंत्र्य, जागतीकिकरण आणि मराठी आदिवासी कविता - प्रा. डॉ. शिवाजी पिराजी जगतवाड — [illegible]

३. अण्णा भाऊ साठे यांच्या कादंबऱ्या आणि मराठी चित्रपट — [illegible]
- प्रा. डॉ. प्रकाश सूर्यवंशी.

४. दलित साहित्यातील शिलेदार : योगीराज वाघमारे — [illegible]
- प्रा. प्रशांत कांबळे

५. भारतीय समाजजीवनातील स्त्रीचे स्थान आणि मराठी साहित्यातील चित्रण - प्रा. रश्मी दहापुते. — १२३

६. आधुनिक कवितेतील सामाजिक बदल — १४३
- प्रा. डॉ. देविदास पांडुरंग खोडेवाड.

क) संकीर्ण

१. भारतीय स्वातंर्त्याच्या ७५ वर्षातील उच्च शिक्षणातील स्थित्यंतरे - प्रा. डॉ. परमेश्वर अभंगराव पाटील. — १५४

२. भारतीय अंतराळवीर : एक दृष्टिक्षेप — १६८
- प्रा. डॉ. शिवराज पाटील.

३. भारतीय शेतकरी आणि कृषी कायदा — १८१
- प्रा. डॉ. एस. पी. घायाळ.

४. भारत आणि टोकियो ऑलिंपिक २०२० — १९१
- प्रा. डॉ. गोविंद काळे.

५. ऑलिम्पिकमध्ये भारत — २०७
- प्रा. डॉ. भास्कर माने.

६. The Impact of Ghandhian Ideology in Narayan's Waiting for the Mahatma — २२१
- Prof. Dr. Mantha Padmabandhavi Prakashrao.

७. India's Foreign Policy after 1991 and it's Challenges — २२७
- Prof. Dr. Bodake Panchafula Ramram.

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

२. तत्रैव - पृ. ४४ - ४५.
३. मध्ययुगीन व आधुनिक कविता - (संपा.) डॉ. मा. मा. जाधव व इतर - कैलाश पब्लिकेशन, औरंगाबाद - प्र. आ. जून २००८ - पृ. १६६.
४. शब्द रत्न - (संपा.) डॉ. मा. मा. जाधव - निर्मल प्रकाशन, नांदेड - प्र. आ. १० जुलै २०१३ - पृ. ७१.
५. लोकप्रबोधनकार अण्णा भाऊ साठे - (संपा.) डॉ. रामशेट्टी शेटकार व इतर - प्रभाकर पब्लिकेशन, लातूर - प्र. आ. १ जानेवारी २०१९ - पृ. १७६.
६. रंगनाथ पठारे यांच्या साहित्यातील स्त्री दर्शन - राजेंद्र सलालकर - शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपूर - प्र.आ. ७ जुलै २०१५ - पृ. १२५.
७. फेसाटी चिंतन आणि मंथन - (संपा.) प्राचार्या डॉ. आशा मुंडे व इतर - अथर्व पब्लिकेशन, धुळे - प्र. आ. जून २०१९ - पृ. १६७.
८. तत्रैव - पृ. २९४.

६. आधुनिक कवितेतील सामाजिक बदल

प्रा. डॉ. देविदास पांडूरंग खंडेवाड
सहाय्यक प्राध्यापक, मराठी विभाग,
खोलेश्वर महाविद्यालय, अंबाजोगाई

आधुनिक मराठी साहित्याचा इतिहास जेव्हा आपण मागे जाऊन धुंडाळतो तेव्हा इंग्रजांचा भारतावर जो एकछत्री अंमल सुरू झाला तो काळ म्हणजे इ.स. १८१८ असा असून ही घटना आधुनिक मराठी साहित्याचा उगम व विकासाला कारणीभूत मानली जाते. या काळात मराठेशाही नष्ट झाली होती. इंग्रजांच्या राजवटभ्त परंपरागत धर्माचे बाह्य अवडंबर, अनिष्ट रूढी परंपरा, दैववाद यात दबलेली इथली जनता त्यांच्या समतावादी दृष्टीमुळे त्यांचे मनोमन स्वागत करत होती. नवे विचार, नव्य जाणिवा, भौतिक सुधारणा यामुळे सामान्य जनता त्यांच्याकडे आकर्षित झाली होती. प्राचीन काळातील महानुभवांचे व्रतवैकल्य, साधनेतील कडक नियम, वारकऱ्यांची केवळ भक्ती-मार्गातील समानता, बहामनी काळातील रूढी परंपरेत अडकलेला समाज या आधुनिक काळातील इंग्रजांच्या सुधारणावादी, नवशिक्षणाच्या सर्वत्री-करणाच्या भूमिकेने सुखावला. या इंग्रजी राजवटीचे स्वागत व कौतुक करताना समकालीन विचारवंत म्हणतात, "येथील अडचणी प्रजेस शिक्षण देऊन तिचा उद्धार करण्यासाठीच प्रभूची योजना आहे." तर याविषयी लोकहितवादी लिहितात, "इंग्रजी अंमला आधी प्रजेची दुर्दशा, मराठेशाहीत दाद नाही व मक्तेदारांचा जुलूम नसेच लन्दुर, शिपाई, इकडे-तिकडे फिरत, त्यातून पेंढाऱ्यांचा उपद्रव लोक त्रासून गेले. त्यामुळे इंग्रज चांगला व इंनसाफी असे लोकांना वाटू लागले व त्यांचे राज्य निर्मिती सहाय्य केले. अशी ही तत्कालीन समाजाची परिस्थिती होती. त्यात इंग्रजांनी समाजाच्या धर्मभावना न दुखावता

सर्वांना समानतेच्या पातळीवर उच्चनीचता, खुलटट अंधश्रद्धा, सती प्रथेस मूठमाती देऊन सर्वसमावेशक शिक्षण, व्यापार, रेल्वे, रस्ते यासारख्या सुधारणा करून गुलामगिरी पद्धतीला कायद्याने बंदी आणली.

नव विचाराच्या शिक्षणाची योजना एलफिस्टन सारख्या अधिकाऱ्यांनी आणली. कागद व मुद्रणकला विकसित होऊ पुस्तक निर्मिती चालू झाली. इंग्रजी ग्रंथ व भाषेचे ज्ञान अवगत झालेल्या भारतीयांनी प्रारंभी भाषांतरित, रूपांतरित साहित्याला चालना दिली. महात्मा फुले, लोकहितवादी, दयानंद सरस्वती, गोपाळ गणेश आगरकर, रानडे, भांडारकर आणि अगदी अलीकडे पर्यंत आंबेडकर हे सर्व इंग्रजी साहित्य व ज्ञानाने दीपून गेले होते. जीवनाच्या सर्व क्षेत्रात इंग्रजी विद्या व संस्कृतीचे अनुकरण सुरू झाले होते. ही अनुकरणाची लाट साहित्यक्षेत्र प्रारंभी भाषांतरित व नंतर पहिल्या पिढीतील मराठी लोकांचा स्वतंत्र साहित्यातून अवतरली. ज्याचा परिणाम मराठी साहित्याने कुस बदलली. परंपरागत धर्म व्रतवैकल्य, कर्मकांड सोवळं-ओवळं, भूतबाधा, परलोक आणि अनिष्ट रूढी परंपरांचा विरोध करून सामाजिक बदलाचे साहित्य, परिवर्तनाचा वसा घेऊन पुढे आले आणि परोपकार, सदाचारी, आत्मसन्मान, स्वातंत्र्य, बंधुता, न्याय या तत्त्वांची जोपासना होऊन आधुनिक बदलाचे परिवर्तनवादी साहित्य पुढे आले. यात मराठी कविताही मागे नाही, तितक्याच जोमाने आणि जोरकसपणे सामाजिक बदलाचे निकष आत्मसात करून पुढे आली.

- **केशवसूत पूर्व कालखंडातील कविता :**

केशवसुत पूर्व कालखंड १८७५ ते १९८५. या कालखंड पासूनच परंपरागत कवितेला, नाकारून नव्या वळणाची कविता आकाराला येण्यास सुरुवात झालेली होती. सर्वात शेवटचा शाहीर परशुराम याला बदलत्या परिस्थितीचे भान होते म्हणून त्याने इंग्रजी अंमलाचे वर्णन करताना लिहिले, "जुने कायदे अगदी मोडित जिधिपून झाली. इंग्रजी राजधान्या अगदीच बुडाल्या. राजांची झाले फजो " त्या

काळात जुने व नवीन या दोहोंचे प्रतिबिंब प्रकर्षाने दिसते. [illegible] दलपतकर, माळवदे, परशुरामतात्या गोडबोले, कृष्णशास्त्री चिपळूणकर, [illegible] शास्त्री लेले, वि. भा. महाजनी, बापूसाहेब कुंभटवाडकर, श्री. म. मा. [illegible] फुले, सावित्रीबाई फुले इत्यादींचे काव्य म्हणजे प्राचीन [illegible]. संस्कृत व इंग्रजी काव्यातील भाषांतर यात प्रभावित होऊन [illegible] होते. या कालखंडात गट सामाजिक परिवर्तनाच्या अंगाने म्हणावे तितके काव्य प्रकटलेले नाही. मात्र ही पहिली सुरुवात म्हणून याकडे डोळेझाक करता येत नाही.

- **केशवसूत कालीन कविता १८८५ ते १९२०**

खऱ्या अर्थाने महात्मा फुले यांच्या 'अखंडादि' काव्य पासूनच कवितेतील सामाजिक बदलाला सुरुवात झालेली आहे. मात्र त्यांच्या अखंडाला तितकी प्रसिद्धी मिळाली नाही. आणि ती परंपरा इतर कवींनी समर्थपणे चालवली नाही म्हणून पुढे जे केशवसुतांच्या रूपाने सामाजनिष्ठ काव्य आले त्यांनी काव्याची परंपरा मळलेली वाट सोडून नवी वाट चोखाळली. त्यामुळे त्यांना आधुनिक कवितेचे जनकत्व बहाल झाले.

त्यांनी अस्पृश्यतेच्या मुळाचा प्रश्न, मनुष्याच्या दुःखसमस्यांशी संबंध, तुतारी, स्फूर्ती, मूर्तीभंजन, नवा शिपाई, निशाणाची प्रशंसा, गोफण इत्यादी कविता सामाजिक बदलाच्या निदर्शक आहेत. परंपरागत, दयदयतेचा विरोध करून बंडाचा झेंडा उभारणाऱ्या आहे. त्या 'दयदायतेचा नव निर्मितीचे' हे लोकांना समजावून सांगतात आणि नव्या काळाचा बदलत्या जीवनाची वाट दाखवतात.

"ब्राह्मण नाही, हिंदुही नाही न मी एक पंथाचा, तेचि पतित की जे आखडती प्रदेश साकल्याचा" आपण नव्या जगातील शूर शिपाई आहोत. सर्वत्र शांतीचे धूत्याचे साम्राज्य आपण अनुसार असंत. ज्ञान-धर्म विरहीत समाज निर्मितीचे बदलाचे स्वप्न जे पाहतात. तुतारी या कवितेत ते बदलाला आव्हान देताना लिहितात,

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist Beed

"जुन्या नवीन या ताजे तारक, जुन्य भूमीवर नवी टवटवी, जुना समुद्रो नवरत्नवी, जुन्यातून जी निष्पत्ती नवी, काय नव्हे श्रेयस्कर."

म्हणजेच ज्या जुन्य, छळणाऱ्या, राक्षसी दृष्ट मनोवृत्तीच्या रूढी परंपरा आहेत, त्या समाजाला कुरडतात. त्याना नाकारून गाडून टाका, आणि त्याचर समतेचा ध्वज फडकवा. 'नियमन मनुजासाठी, मानव नसे नियमनासाठी' याची जाणीव ठेवा. जुन्याचा धागा न सोडता नव्या कडे पाहून स्वागत करा, असे ते सांगतात.

याच कालखडात ना. वा. टिळक, रहाळकर असे अनेक कवी होऊन गेले. मात्र कवि 'बी' भा. रा. तांबे, गोविंदाग्रज असे दोन-चार कवी सोडले तर केशवसुतांच्या कवितेतील सामाजिक परिवर्तनाचा धागा होता, तो इतरांना साधला नाही. कवी 'बी' यांची 'डंका' ही कविता सामाजिक जागृतीची आहे. सामाजिक विषमता, भेदाभेद, दास्यत्व त्याचा ते विरोध करतात. ते लिहितात, "ते स्वातंत्र्य खरे न फक्त आपले जे तोडीते बंधने, अन्यायाच्या पदशृंखलास बघते निष्कप ऐशा मन' म्हणजेच बाह्य बदलापेक्षा अंतर्गत भेदाभेद नष्ट होऊन समानता आणली पाहिजे असे ते म्हणतात.

- **तृतीय कालखंडातील कविता १९२० ते १९४० :**

या कालखंडातील कविता विशेषत्वाने सामाजिक बदलाला आव्हान देणारी नव्हती, तर ती निसर्ग सौंदर्य वर्णन करणारी विनोद विडंबन यापासून मनोरंजन करणारी अशी झाली. काही मोजक्याच कविनी सामाजिक बदलाला कमी-अधिक प्रमाणात वाव देवून लेखन केले. माधव ज्युलियन यांनी 'सुधाकर' या खंड काव्यातून सुधारकांच्या दांभिक, ढोंगी व बोलघेवड्या वृत्तीवर उपहासात्मक टीका केलेली आहे. कवी गिरीश यांची कविता सामाजिक अन्यायाला वाचा फोडणारी आहे. स्त्रियांचे दुःख ते मांडतात. 'अभागी कमल' या कथा काव्यात विधवेच्या दुःखाच व तिच्या होणाऱ्या छळाचे करूणामय वर्णन येत आहे. 'अंबराई' या

काव्यात एका शेतकऱ्याच्या अधःपतनाची कथा आहे. 'यशवंता' ची बंदीशाळा या काव्यात बंदीशाळेत येऊन पडलेल्या मातेची दुखत कथा आहे. ना. ग. देशपांडे यांची कविता ग्रामीण जीवनाचे चित्रण रेखाटते असे त्राटक बोटावर मोजणे इतके कवी सोडले, तर या कालखंडातील जे कवी आहेत ते केशवसुतांची समाज बदलाची बंडखोरी स्वीकारताना दिसत नाहीत.

- **सन १९३५ ते १९५० मधील कविता :**

या कालखंडातील काव्याने मागच्या कालखंडातील ज्या समाजाच्या आशा-आकांक्षा पूर्ण झालेल्या नाहीत त्या पूर्ण केल्या. कवि अनिल यांनी फुलवात, भग्नमूर्ती, चिनी मुलास, पेर्ते व्हा आणि चिरशैवन हे काव्यसंग्रह लिहिलेले ज्यातून होत चाललेल्या संस्कृतीच्य विनाशाची व्यथा, मानवतावाद, समाज जीवननिष्ठा आणि समाज जाभ्डिमुक्ता व्यक्त करणारी आहे.

याच काळातील कवितेला सामाजिक बदलाचे वळण देण्याचे काम कुसुमाग्रजानी केले, त्यांचे जीवनलहरी, विशाखा, किनारा, मराठीमाती, स्वागत, हिमरेषा, वादळवेल, रसयात्रा या संग्रहातून उत्कृष्ट जीवननिष्ठा, दलित व पीडितांचा जिव्हाळा, सामाजिक व राजकीय अन्याय व जुलूम ह्याविरूद्ध चीड अत्यंत दाहक व तेजस्वी होऊन अवतरली आहे.

"जुने जाऊ द्या मरणालागुनि । जाळूनी किंवा पुरूनी टाका । सडत न ऐक्या ठायी ठाका । सावध ऐका पुढल्या हाका" अस्पृश्य परंपरागत जातीभेदावर हल्ले करणारी ही बदलाची जाणीव यांची कविता घेऊन येते. वा. रा. कांत यांचा रुद्रवीणा हा कवितासंग्रह अग्निपंथ व आशिया हे दोन खंडकाव्य यातून त्यानी समाजावर होत असलेले अन्याय व जुलुम याविषयीची चीड व्यक्त केली आहे. बा. भ. बोरकर यांचे जीवन संगीत, चिनार, बोरकरांची कविता या संग्रहातून भावोउत्कतेबरोबर जीवननिष्ठा व मूल्निष्ठा जोपासलेली आहे. रा. अ. काळेले यांचे वाग्वसंत, भावपूर्ण व ओळखीचे सूर हे संग्रह आहेत, जे दलितांच्या कल्याणाची

तळमळ व्यक्त करणारे आहेत. तसेच पु. शि. रेगे, वि. मा. कुलकर्णी, ना. ग. जोशी आदि कवी या कालखंडात कमी-अधिक प्रमाणात सामाजिक बदलांची भावना जोपासून लेखन करताना दिसतात.

■ **स्त्री कवयित्रीची आधुनिक कविता :**

स्त्री मन व त्यांचे समाजातील बदलते स्थान याचा स्वीकार करून परंपरा स्त्रीला व्रतवैकल्य, रूढी-परंपरेत अडकून त्यांचे सर्व पातळीवरचे शोषण करणाऱ्या प्रथेला नकार देऊन समानतेच्या धाग्यात बांधण्याचे काम नव्या कवयित्रीने केलेले आहे. यात आधुनिक काळातील पहिली आद्य कवयित्री म्हणून लक्ष्मीबाई टिळक यांच्याकडे पहावे लागते. त्यांचा 'भरली घागर' हा संग्रह विशेष आहे.

तसेच शेतकरी कुटुंबात जन्मलेल्या बहिणाबाई चौधरीच्या 'बहिणाबाईची गाणी' सजीवनी मराठे यांचे संजीवन, शका, संसार, छाया हे संग्रह इंदिरा संत यांचे शेला, मेरी, रंगबावरी, मृगजळ, बाहुल्या हे संग्रह शांता शेळके यांचे वर्षा रूपसी, तोच चंद्रमा हे संग्रह पद्मा गोळे इ. यांचे हे काव्य त्रोटक जरी असले तरी त्यातून सौंदर्य, वात्सल्य, कौटुंबीक जिव्हाळा, स्त्री मनाचे कागोरे, आशावाद इत्यादी गुण विशेष असले तरी स्त्रीसुलभ मनाच्या भावना आणि स्त्री जीवननिष्ठा पदोपदी पहावयास मिळतात.

■ **१९५० नंतरची मर्ढेकर संप्रदायाची कविता :**

या कालखंडातली नवी कविता ही मर्ढेकरी संप्रदायाची कविता, तसेच दुसऱ्या महायुद्धानंतर ची कविता म्हणून पुढे आली. जी बदलत्या समाजाची द्योतक म्हणून पुढे आलेली आहे. याला कारणही तत्कालीन घटनात आहे. दुसऱ्या महायुद्धात झालेला भयंकर नरसंहार, यातून मानवी भावभावनांना मुठमाती मिळाली. जीवनातील नैतिक मूल्यांचा ऱ्हास झाला. माणसं व समाज अस्थिर झाला. यंत्राचे स्वागत होऊन मानव भावशून्य झाला. आर्थिक पिळवणूक सुरू झाली. त्यातून पुन्हा दलित-दुबळ्यांचे सर्वस्व पातळीवर शोषणाला सुरूवात

झाली. सर्वत्र ढोंगी पणा व दांभिकता माजली. या सर्व परिस्थितीचा परिणाम काव्यावरही झाला आणि काव्यातून नैराश्य, वैफल्याचे सुर उमटू लागले. याच काळात कवितेच्या बदलाची लाट उसळली होती. तिही आत्मसात करून आपल्या कवींनी नव्या सूपाची काव्यनिर्मिती सुरू केली.

या काळातील सामाजिक बदलाच्या नवकवितेचे जनकत्व बा. सी. मर्ढेकर यांच्याकडे जाते. त्यांनी 'शिशिरागम' काही कविता, आणखी काही कविता, हे संग्रह लिहिले. त्याना दुसऱ्या महायुद्धानतर इथल्या माणसांची स्थिती 'पिपात मेलेल्या उंदरासारखी वाटते. ते'पिपात मेल्या ओल्या उंदीर । माना पडल्या मुरगळल्याविणा' या कवितेचे ते विडंबन करून समाजातील यांत्रिकता, विषमता, निर्जीव, ढोंगी पुराणाचा स्वार्थी संस्कृतीचा विरोध करतात.

'शुभ करोति कल्याणं दारिद्र्य ऋण सपहो । सालो साल मरू दे मेला । रेभ भराभर पळू दे' ही भांडवलदारांच्या विरूद्धची आग ते ओकतात आणि समाजातील दारिद्र्य ही उजागर करतात. आणि त्यांच्या वेदनेचे, निराशेचे दुःख काव्यात मांडतात.

मर्ढेकर समकालीन विंदा करंदीकर यांच्या स्वेदगंगा हा कवितासंग्रह जीवित कोंडी, कीर्तन, स्वेदगंगा, माझ्या मना बन दगड, यंत्र, अवतार, गोंधळ, दाता पासून दाताकडे या कविता समाजातील शेतकरी, कामकरी व दलित जीवनाची दुःखे रेखाटतात.

"जनतेच्या पोटामध्ये आग आहे, आग आहे । जनतेच्या डोळ्यामध्ये शंकराचा राग आहे । जनतेच्या पायापुढे प्रकाशाची वाट आहे । जनतेच्या बाहुमध्ये सागराचे बळ आहे.' करंदीकरांनी ही आधुनिक काळातील समाजाची बदलती स्थिती कधी चिकित्सक, तर कधी उपहासात्मक मांडतात. तसेच य. द. भावे यांनी आर्द्रा, हळवे भिंग हे दोन संग्रह लिहिले. यातून जीवनातील यांत्रिकता, विषमता यांचा स्वीकार करून लिहिलेले भाव उतरले आहेत. पु. शि. रेगे यांच्या

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

कवितेत मुक्त प्रणयविष्कार, नव्या समाजजीवनातील कुरूपता, विद्रुपता विगलितमना विफलता याचे चित्रण येते. मंगेश पाडगावकरांनी 'जिप्सी' मधून दीन-दलित श्रमिक यांच्या विषयी जिव्हाळा व्यक्त केला आहे. वसंत बापट यांनी बिजली या संग्रहातून राजकीय आणि सामाजिक बदलाचे जीवन साकारले आहे. तसेच वसंत बापट, न. स. जोशी, दास गणू, संत तुकडोजी महाराज, ग. दि. माडगुळकर इत्यादींनी सामाजिक बदलाची कविता लिहिली.

■ **१९६० नंतरचह नवप्रवाह ची कविता :**

या काळातील कविता ही समाजातील सर्वांगीण बदलाचे कांगोरे मांडणारे आहे. ६० नंतर प्रारंभी मार्क्सवादी व मर्ढेकरांच्या प्रभावातून कविता आली. कवितेत जो साचलेपणा होता तो नाकारून औद्योगिकरणाच्यारेट्यात कष्टकरी कामकरी यांचे होणारे शोषण, कामगार-मालक संघर्ष यावर प्रकाश टाकणारे आहे. बदलत्या काळाचा पुरस्कार करणारे आणि मार्क्सवादी झपाटलेले आघाडीचे कवी म्हणजे नारायण सुर्वे यांनी जाहीरनामा, माझे विद्यापीठ, ऐसा स्वामी वंद्य हे संग्रह लिहिले. त्यातून प्रथमच मराठी कवितेत मार्क्सवादी जाणिवा आल्या. तसेच अमरेश, राजा राजवाडे इत्यादींनी जातिभेद, उच्चनीचता नाकारून या समाजाची रचना 'आहेरे-नाहीरे' या दोन घटकात केली आणि तो श्रीमंत मालकांच्या आदेशाचा गुलाम बनत चाललेला आहे. त्याचे शारीरिक, मानसिक शोषण होत आहे. त्याची बाजू घेऊन आपल्या सगट आपल्या वाट्यावर आलेले चाळलेले, कुजलेले शोषीत जीवन जशास तसे काव्यातून मांडून समाजाच्या दुःखाला वाचा फोडली आणि "भाकरीचा चंद्र शोधण्यातच जिंदगी बर्बाद झाली." इतभ्रर पोटाची टीचभर खळगी भागवण्यासाठी चाललेला संघर्ष सूर्वे मांडतात आणि सामाजिक विषमता, दलित-अस्पृश्य म्हणून नशिबी आलेले जगणे, दुःख गुलामीत जगण्याची दाहकता मांडतात. साधारणतः १९६५ नंतर शिक्षणाच्या सार्वत्रिकीकरणाच्या भूमिकेमुळे सामान्य दलित, ग्रामीण, आदिवासी दळलेला, पिचलेला समाज त्यातील

नवशिक्षित पीढि, नव्याने आत्मसात केलेले ज्ञान, त्याची चिकित्सा करू लागली आणि आपणही आपले अनुभव मांडू शकतो, आत्मिक लेखनाची प्रेरणा व शिक्षण आणि ज्ञान तळागाळातील अस्पृश्य म्हणून गणल्या गेलेल्या, समाजाला सुधारण्याची कास धरून आपले सर्वस्व जीवन पणाला लावणारे महात्मा फुले, शाहू, आंबेडकर यांची प्रेरणा घेऊन लिहिता झाला. त्यातून दलित, आदिवासी, स्त्रीवादी, मुस्लिम इत्यादी नवे प्रवाह पुढे आले. प्रारंभी त्यांना विरोध झाला. ही वेगळी चूल कशाला असे प्रश्न विचारून विरोधही झाला, मात्र ही नव्या प्रवाहाच्या लेखनाची लाट इतकी मोठी होती की, त्यात सारेच विरोध वाहून गेले. आणि खऱ्या अर्थाने आदिवासी, दलित, स्त्री, मुस्लिम समाजाच्या जीवनाचे वास्तव दर्शन घडवणारी कविता पुढे आली. हा परंपरागत कवितेला मोठा धक्का होता. स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, न्याय, अस्पृश्यता निवारण, दया, करूणा, प्रज्ञा, शील इत्यादी मूल्यांचा स्वीकार यात आहे. तसेच अन्यायाचा नकार, परंपरागत अनिष्ठ रूढी परंपरा विरोधी, विद्रोह आणि गुलामीची चीड आहे हीच परंपरा पुढे १९९० नंतर व आज कोरोनोत्तर कवितेतून चालू आहे.

■ **निष्कर्ष :**

१. आधुनिक काळातील कविता ही आत्मलेखन व आत्माविष्कारातून व्यक्तिनिष्ठ भावना व विचार मांडते.
२. व्यक्तिस्वातंत्र्य व समतेचा पुरस्कार करून व्यक्तींच्या भावना, विचार आणि अनुभव व्यक्त करते.
३. ही कविता सामाजिक ध्येयवाद, स्वातंत्र्यप्राप्तीची ईर्षा बाळगून अवतरली होती.
४. जुन्या रूढी प्रहांवर कठोर हल्ला करून समता, स्वातंत्र्य बंधुता या तत्त्वत्रयीचा पुरस्कार करणारी आहे.
५. या काळातील कवितील प्रेम वैयक्तिक न राहता सार्वजनिक स्वरूप धारण

आलं.

६. निसर्गाच्या ठिकाणी मानवाला सुख, शांती व समाधान देण्याचे सामर्थ्य असते, तो मानवाला कोणते ना कोणते तत्त्व शिकवतो ही कोणाची नवी तस आली.

७. समाजनिष्ठा व सामाजिक भानही उत्कटतेने या कवितेतून व्यक्त होते.

८. सामाजिक सुधारणांचा पुरस्कार करून परंपरागत अनिष्ट-रूढी परंपरा, व्रतवैकल्य जाती-भेदातील विषमता, उच्च-नीच, सोवळे-ओवळे यांचा विरोध करून सामाजिक न्यायाची कविता अवतरली ती, उद्बोधक व प्रेरक ठरली.

९. नवप्रवाहच्या माध्यमातून सर्व जाती-धर्मातील लोकांना आपले अनुभव मांडण्याचे प्रेरणा व प्रोत्साहन मिळाले.

- **संदर्भसूची :**

१. प्र. न. जोशी वाङ्मयाचा विवेचन इतिहास, स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे २००१

२. नागनाथ कोलापल्ले, संपादक जागतिकीकरणानंतरचे मराठी साहित्य, स्नेह पब्लिकेशन, पुणे, २०११.

३. रा. ग. जाधव, साठोत्तरी मराठी कविता व कवी, साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद १९९७.

४. डॉ. शरणकुमार लिंबाळे, साठोत्तरी मराठी वाङ्मय प्रवाह, दिलीपराज प्रकाशन पुणे २००७.

५. प्रा. ग. ना. घाटोळे, मराठी वाङ्मय इतिहास, श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर २००८.

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed ★

क)
संकीर्ण

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

Kholeshwar Mahavidyalaya * Ambajogai, Dist. Beed *

10 डिसेंबर 2021

Capter

मानवी हक्क

(समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य)

सपांदक

डॉ. रिता एम. धांडेकर

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

मानवी हक्क

(समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य)

■ डॉ. रिता एम. धांडेकर

■ प्रथम आवृत्ती – १० डिसेंबर २०२१

© प्रकाशक व संपादक

■ प्रकाशक

आधार पब्लिकेशन, अमरावती.

हनुमान मंदिराजवळ, पाठ्यपुस्तक मंडळा समोर,

वि.म.वि.कॉलेज मागे, अमरावती

मो. ९५९५५६०२७८

email- aadharpublication@gmail.com

■ मुखपृष्ठ संकल्पना

विलास पवार

सरिता ग्राफिक्स, अमरावती

■ अक्षरजुळवणी

सरिता ग्राफिक्स,

कठोरा रोड, अमरावती

■ Price : 200/-

ISBN-978-93-91305-55-0

सुचना:- सदर अंकामध्ये प्रकाशित झालेल्या लेखास, संपादक, प्रकाशक, मालक, मुद्रक जबाबदार राहणार नाही. या अंकामध्ये प्रकाशित झालेले लेख लेखकाचे त्यांचे वैयक्तिक मत आहे.

12	स्त्रियांचे आरक्षण आणि मानवी अधिकार प्रा. गौरी चंद्रशेखर चिंचोळकर
13	जनहित याचिका **प्रा. संगिता सोमैया**
14	भारतीय संविधान और मानव अधिकार एक अध्ययन **डॉ. टी.एल. मिर्झा**
15	भारतीय प्रजातंत्र और मानवाधिकार **डॉ. मनीष कुमार साव**
16	महिला सुरक्षा आणि मानवी हक्क प्रा. डॉ. प्रकर्ष सुभाषराव देशमुख
17	मानवी अधिकाराचा विकास **डॉ.तात्या बाळकिसन पुरी**
18	मानवाधिकार व कोरोना बाधित रुग्ण **डॉ. जयंतकुमार एम. मस्के**
19	भारतीय संविधानातील उद्देशपत्रिकेचा अर्थ **प्रा. डॉ. जे. टी. कांबळे**
20	मानवी हक्क : संकल्पना व विकास **डॉ. रिता धांडेकर**
21	Indian Constitution and human rights **डॉ.कविता गंगाधर सोनकांबळे**
22	प्रकल्पग्रस्तांच्या संदर्भात मानवाधिकार **प्रा.डॉ. जे. जे. जाधव /डॉ. मंगेश वसंतराव कडू**
23	भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य **प्रा.डॉ.माधव केरबा वाघमारे**
24	संविधानिक मूल्य आणि मानवाधिकार : एक राजकीय अध्ययन **प्रा. डॉ. स्वामी विरभद्र गुरप्पा**
25	मानवी हक्क आणि रोहिंग्या निर्वासित समूह **डॉ. संदीप बी. काळे**

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed ★

मानवी अधिकाराचा विकास

डॉ.तात्या बाळकिसन पुरी
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख खोलेश्वर महाविद्यालय,अंबाजोगाई
मो.न.९०६०७४७१८५

प्रस्तावना :

मानवी अधिकार मानवाला जन्माबरोबरच निसर्ग नियमानुसार प्राप्त झालेले आहेत ते कोणत्याही प्रथा, परंपरा अथवा राजाची देणगी नाहीत. यामुळेच मानवी अधिकारास मुलभूत अधिकार किंवा नैसर्गिक अधिकार म्हणतात. मानवी अधिकार (स्त्री-पुरुष) नैसर्गिक व समतेवर आधारलेले आहेत. मानवी अधिकार संकल्पनेचा वैश्विव स्तरावर विकास होण्यास संघर्ष व चळवळीमुळे बराच कालावधी लागता आहे. मानवी अधिकार व्यक्तीला चांगले जीवन जगण्यासाठी आवश्यक आहेत. मानवी अधिकार व्यक्तीच्या व्यक्तीमत्वाचा सर्वांगीण विकासासाठी आवश्यक आहेत. यामुळे आधुनिक काळात अनेक विचारवंत, कायदे पंडीत, राजकीय नेते यांनी मानवी अधिकाराचा पुरस्कार केला आहे. अलिकडील काळात जगातील बहुतांश देशांनी लोकशाही शासन, कल्याणकारी राज्य व राज्य घटनेतून मानवी अधिकाराचा स्विकार केलेला असून व्यक्तीचे जीवनमान उंचावण्यासाठी प्रयत्न करत आहेत. तसेच व्यक्तीला जास्तीत जास्त मानवी अधिकार कसे दिले जातील याची काळजी आज जगातील सर्वच राष्ट्र करतांना दिसत आहेत. यामुळे आज एकविसाव्या शतकात मानवी अधिकार हा चर्चेचा व परवलीचा शब्द बनलेला आहे.

मानवी अधिकाराची व्याख्या :

१)रॅन्डम हाऊस विश्वकोषानुसार : ''मानवी अधिकार म्हणजे व्यक्तीला जन्माने प्राप्त झालेले असे अधिकार जे व्यक्तीला सन्मानाने जगण्यासाठी आवश्यक आहेत. ''

२) मॅकफरलेन : ''मानवी अधिकार हे असे नैतिक अधिकार आहेत जे प्रत्येक स्त्री व पुरुषाला माणूस या नात्याने समान प्राप्त झालेले आहेत. ''

३) लास्कीच्या मते : ''सामाजिक जीवन जगताना व्यक्तीला स्वत:चा सर्वांगीण विकास साधण्यासाठी अधिकार महत्वाचे आहेत, ज्याशिवाय व्यक्तीचा विकास संभव नाही. प्रत्येक समाजात मानवाला सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतीक अधिकारासाठी लढा द्यावा लागला. मुळात मानव हा स्वातंत्र्यप्रिय प्राणी आहे. निसर्गत: त्याला काही मानवी अधिकार

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

Kholeshwar ... Ambajogai, Dist. Beed

व्यक्तीला विनाचौकशी आरोप न करता अटक न करणे व तुरुंगात न डांबणे आदी मर्यादा या कायद्याने राजावर घालण्यात आल्या. हा जगातील पहिला मानवी हक्काचा जाहिरनामा म्हणून मान्यता पावला. रोमन साम्राज्याचा सेंट ऑगस्टीन, सेंट थॉमस ॲक्वीनास या धर्मगुरुनी राज्य व धर्म यांच्या परस्पर संबंधावर लेखन करुन विचार मांडले. यातुन राज धर्माची कल्पना पुढे आली. राजा श्रेष्ठ की धर्मगुरु श्रेष्ठ असा वाद, संघर्ष सुरु झाला. धर्म विरोधी धार्मिक सुधारणा चळवळी निर्माण झाल्या. मार्टिन ल्युथर किंग, काल्वीन, ज्वीग्ली यांच्या नेतृत्वाखाली हया चळवळी झाल्या. जनतेच्या पाठिंब्याने धर्म संस्थेपेक्षा राज संस्था श्रेष्ठ असल्याचे मान्य झाले. राज्य संस्था, राजाचा विजय झाला. राजा स्वतःला ईश्वराचा अवतार प्रेषित किंवा पुत्र म्हणवत असे. राज्याची अमर्याद सत्ता निर्माण झाल्याने जनतेवर अन्याय, अत्याचार, जुलूम व शोषण वाढले. यातून जनतेला मुक्ती मिळावी म्हणून विचारमंथन सुरु झाले. धर्मसत्ता व राजसत्ता यांचे परस्पर संबंध व्यक्त करणारे लेखन व साहित्य उदयाला आले. थॉम्स हॉब्ज कालीन इंग्लंड मध्ये नागरी युध्द (Civil War) पहिला चार्लस ची हत्या, संसद की राजा श्रेष्ठ (सार्वभौम) वाद, आरजकता, अशांतता वाढली होती. यांचे अवलोकन करुन अनियंत्रीत राज सत्तेचे **लेविएथन** या ग्रंथात हॉब्जने समर्थन केले. सामाजिक कररातून राज्य, समाज व प्रत्येक व्यक्तीला जीवन जगण्याचा (नैसर्गिक हक्क) अधिकार प्राप्त झाला. जॉन लॉकने नैसर्गिक अधिकाराचे, व्यक्ती स्वातंत्र्याचे समर्थन व राजसत्तेवर मर्यादा घातल्या. लोकामध्ये जागृती घडून आणली यामुळे लोकांच्या अधिकार मागणीला विशेष महत्व प्राप्त झाले. इ.स. १६२८ मध्ये **पिटीशन ऑफ राईटस** या सनदेने राज सत्तेवर मर्यादा घालण्यात आल्या. इ.स. १६८८ च्या रक्तहीन क्रांतीने राजाचे अधिकार कमी करुन १६८९ मध्ये जनतेच्या अधिकाराची सनद **बील ऑफ राईटस** स्विकारण्यात आली. अशा प्रकारे नागरीकांचे मुलभूत अधिकार या कल्पनेचा प्रारंभ सर्वप्रतम रुसोने सोशल कान्ट्रक्ट (Social Contract) मध्ये संपूर्ण समाज सार्वभौम असल्याची व संपूर्ण क्रांतीची कल्पना विशद केली. रुसोच्या विचाराने प्रभावीत होवून फ्रेंच राज्यक्रांती झाली. इ.स. १७८९ मध्ये फ्रेंच राज्य क्रांतीने अनियंत्रीत १६ व्या लूईची सत्ता नष्ट करुन मानवी हक्काचा जाहिरनामा प्रसिध्द केला. फ्रेंच क्रांतीने जगाला स्वातंत्र्य, समता व बधुंता या महान तत्वाची देणगी दिली. फ्रेंच राज्याक्रांतीच्या प्रभावाने १७७६ मध्ये अमेरिकेने स्वातंत्र्याची घोषणा केली. व १७९१ मध्ये मानवी हक्कांचे विधेयक राज्यघटनेत समाविष्ट केले.

विसाव्या शतकाच्या सुरुवातीला मार्क्सच्या साम्यवादी विचाराने प्रभावित होवून साम्यवादी क्रांतीने जोर धरला. रशियात लेनिनच्या नेतृत्वाखाली झारशाहीच्या विरोधात १९१७ मध्ये **रशियन साम्यवादी क्रांती** घडून आली. या क्रांतीतून रशियन जनतेला मानवी अधिकार व स्वातंत्र्य प्राप्त झाले. या बरोबरच काही परिषदामधून मानवी अधिकाराचे समर्थन करण्यात आले. यामध्ये व्हिएन्ना परिषदेने गुलामाच्या व्यापारावर बंदी घातली. बर्लिन व हेग परिषदेने मानवी व्यक्तीमत्वाचा दर्जाआणि सन्माना संबंधात चर्चा केली. १९१९ जगात कायम शांतता व सुव्यवस्था निर्माण करण्यासाठी स्थापन झालेल्या राष्ट्रसंघाने मानवी हक्काची घोषणा केली. या पार्श्वभूमीवर मानवी हक्काची कल्पना साकार झाली. १९४१ ला अमेरिकेचे राष्ट्रध्यक्ष रुझवेल्ट यांनी चार स्वातंत्र्याची घोषणा केली.

मानवी अधिकाराचा वैश्विक जाहिरनामा :

१९४६ मध्ये सॅनफ्रॅन्सिस्को परिषदेत स्मटस यांनी मानवी अधिकाराची भूमिका स्पष्ट करताना ठराव मांडला. १६ फ्रेबुवारी १९४६ मध्ये श्रीमती एलिनर रुझवेल्ट यांच्या अध्यक्षतेखाली मानवी अधिकार आयोगाची स्थापना करण्यात आली. संयुक्त राष्ट्रसंघाच्या महासभेने १०डिसेंबर १९४८ रोजी पॅरिस येथे **मानवी हक्काचा जाहिरनामा** प्रसिध्द केला. हा जाहिरनामा ४८ विरुध्द ० मतांनी समंत झाला. १९५० पासून १० डिसेंबर हा दिवस जागतिक मानवी हक्क दिन म्हणून साजरा केला जातो. मानवी हक्क जाहिरनाम्यात एकूण ३० कलमे नमूद करण्यात आली आहेत. जगातील सर्व मानव जन्माने स्वतंत्र आहे. सर्वांचा दर्जा स्वतंत्र आहे, जात, धर्म, भाषा, लिंग आदि भेदभाव न पाळता हे हक्क उपभोगावयास मिळाले पाहिजे असे म्हटले आहे. मानवी हक्कांच्या जाहिरनाम्याची सुरुवात एका उद्देश पत्रिकेपासून होते.

सर्व माणसे जन्मतः समान अणि त्यांना जन्मतःच अविच्छेदन अधिकार व मूलभूत स्वातंत्र्य प्राप्त झालेली आहेत. अधिकार आणि स्वातंत्र्य या वस्तूतः एकाच नाण्याच्या दोन बाजू आहेत. मूलभूत मानव अधिकार आणि ती उपभोगण्याचे मूलभूत स्वातंत्र्य मानव जातीला या दस्तऐवजाने दिले आहे. सगळयासाठी न्याय आणि प्रतिष्ठा हे मानवी अधिकराचे मध्यवर्ती सुत्र आहे.

मानवी अधिकाराचे वैश्विक विधेयक १९६६ मध्ये युनोच्या आमसभेत मांडण्यात आले. १९७६ मध्ये पुरेशा सदस्य राष्ट्राच्या पाठिंब्यानंतर त्यास आंतरराष्ट्रीय कायद्याचे स्वरुप प्राप्त झाले. मानवी अधिकारात राजकीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक,

Khoieshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed

शैक्षणिक अन्य अधिकाराचा समावेश करण्यात आलेला आहे. स्वातंत्र्यानंतर भारताने युनोच्या मानवी अधिकाराच्या वैश्विक जाहिरनाम्यावर स्वाक्षरी केली. जगातील नव स्वतंत्र राष्ट्रांनी भारतासह आपल्या संविधानात मानवी अधिकाराचा समावेश केला आहे.

मानवी अधिकार व भारत :

भारतामध्ये प्राचीन सिंधू संस्कृतीमध्ये स्त्री-पुरुष समानता व विकासासाठी समान मुलभूत अधिकार व स्वातंत्र्य होते वैदिक कालखंडात ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद यामध्ये विश्वामित्र, मांतग ऋषी, जाबाल ऋषी आदिसह मैत्रेयी, गार्गी, विश्ववरा अपाला, घोषा आदी महिला विदुषीने वेदामध्ये ऋचांच्या रचनाकार म्हणून गणल्या गेल्या. उत्तर वैदिक काळात गुणकर्माऐवजी जन्माधारित वर्ण व्यवस्था निर्माण होवू लागली. यामुळे स्त्री-पुरुष असमानता, मानवी अधिकाराचे हनन या प्रक्रियेला प्रारंभ झाला. जैन, बौध्द पंथाचा-धर्माचा उदय झाला, वर्ण व्यवस्था, स्त्री-पुरुष विषमता, कर्मकांड, वाईट रुढी, प्रथा, परंपरा, पुरुषसत्ताक पध्दतीचा विरोध बौध्द भिखु व जैन मुनींने केला. गुप्त काळात वराहमिहीर, चरक, सुश्रुत, भवभूती, कालिदास आदि महापुरुषांनी या काळातील मानवी अधिकाराच्या संरक्षणाची, विकासाची काळजी घेतल्याने प्रचंड प्रगती झाली. या काळाला मानवी अधिकारासाठी सुवर्ण काळ म्हटले तर चुकीचे ठरणार नाही.

मध्ययुगीन काळाच्या प्रारंभी मुस्लिम आक्रमणाने प्राचीन तक्षशिला, नालंदा ही शिक्षण केंद्रे उध्दवस्त केली. या काळात राजेशाही, स्त्री-पुरुष असमानता, चार्तुवर्ण पध्दती, कर्मकांड, वाईट रुढी, परंपरा (केशवपन, सतीप्रथा, मुरळीप्रथा, अस्पृश्यता, बालविवाह) अशा अनेक प्रकारच्या प्रथामुळे स्त्रियां, अस्पृश्य, भटके यांना मानव अधिकार नाकारले गेल्याने त्यासाठी हा कालखंड अंधार युग ठरला.

आधुनिक काळात ब्रिटन मध्ये औद्योगिक क्रांती झाली. प्रबोधन युग, धार्मिक सुधारणा, ब्रिटीश साम्रज्य, राजेशाहीचा ऱ्हास, इंग्लंड-फ्रांन्स-अमेरिकन राज्यक्रांती, मानवी हक्कांचे जाहिरनामे विविध परिषदा आदिच्या प्रभावातून भारतीय उच्च विद्या विभूषीतानी समाज, धर्म, राज्य सुधारणेचे महान कार्य केले. यात राजाराम मोहनरॉय, महात्मा फुले, आगरकर, रानडे, महात्मा गांधी, आंबेडकर आदी. मानवी अधिकार व समानतेचा संदेश देणाऱ्या, कर्मकांडे, विषमता, वाईट रुढी व परंपरावर संत, साहित्यीकाने प्रल्हार केले. संत तुकाराम, संत एकनाथ, संत नामदेव, संत जनाबाई, बहिणाबाई, रमाबाई, ताराबाई शिंदे व अन्य महिला संत, साहित्याकांनी सामाजिक, धार्मिक सुधारणेसाठी व मानवी अधिकारासाठी

प्रयत्न केले. ब्रिटीश राजवटीत भारतात औद्योगिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजकीय विकासाला कायद्याने प्रोत्साहन दिले. ब्रिटिश राजवटीत सर्व प्रथम १९९५ मध्ये लोकमान्य टिळकांनी मुलभूत अधिकाराची मागणी केली. १८१८ मध्ये कॉंग्रेस अधिवेशनात, १९२२ महात्मा गांधी यांनी, १९२८ नेहरु रिपोर्ट, १९३१ सरदार वल्लभभाई पटेल यांच्या अध्यक्षतेखाली कराची अधिवेशनातून मानवी अधिकार व स्वातंत्र्याची मागणी करण्यात आली. १५ ऑगस्ट १९४७ रोजी भारताला स्वातंत्र्य मिळाले. स्वतंत्र भारताच्या राज्यघटनेत मुलभूत अधिकाराचा समावेश लिखित स्वरुपात करण्यात आला. मुलभूत अधिकार ही भारतीय संविधानातील **मुलभूत अधिकाराची सनद** आहे. ही सनद भारतीय नागरिक म्हणून त्यांचे आयुष्य शांतता व समानतेने व्यतीत करण्याचे नागरी अधिकार प्रदान करते. हे अधिकार कोणी हिरावून घेण्याचा प्रयत्न केल्यास त्यास घटनेतील कायद्यानुसार न्यायलय दंड व शिक्षा करते. भारतीय संविधानातील प्रकरण ३ कलम १२ ते ३५ मध्ये ७ प्रकारचे मुलभूत अधिकार दिलेले आहेत.

१)समानतेचा अधिकार (कलम १४ ते १८)

२) अभिव्यक्ती स्वातंत्र्याचा अधिकार (कलम १९ ते २२)

३) शोषणापासून संरक्षणाचा अधिकार (कलम २३ व २४)

४) धार्मिक स्वातंत्र्याचा अधिकार (कलम २५ ते २८)

५) सांस्कृतिक व शैक्षणिक अधिकार (कलम २९ व ३०)

६) मालमत्तेचा अधिकार (कलम ३१)

७) न्यायालयात दाद मागण्याचा अधिकार (कलम ३२)

या व्यतिरिक्त कलम ३३ ते ३५ मध्ये अनुषंगिक अधिकाराची तरतूद करण्यात आलेली आहे. मालमत्तेचा अधिकार (कलम ३१) १९७८ मध्ये ४४ व्या घटनादुरुस्तीने वगळण्यात आला आहे. आता मालमत्तेचा अधिकार कायदेशीर अधिकार म्हणून कलम ३०० क मध्ये नमूद केला आहे. म्हणजे आता भारतीय संविधानात मुलभूत अधिकार सहाच आहेत मुलभूत हक्क दिल्याने जनतेचे कल्याण होत नाही. यासाठी राज्याने अनुकूल परिस्थिती निर्माण करणे आवश्यक आहे. समाजात समतेचे वातावरण, शासनाची ध्येय धोरणे सामाजिक कल्याणाच्या दृष्टीने असावीत कल्याणकारी योजना राबविण्यासाठी शासनाला, राज्यकर्त्यांना मार्गदर्शक तत्वाची गरज असते हे ओळखून घटनाकारांनी राज्यकर्त्यांसाठी मार्गदर्शक किंवा निर्तीनिर्देशक तत्वाचा समावेश प्रकरण ४. कलम ३६ ते

Kholeshwar Mahavidyalaya * Ambajogai, Dist. Beed *

५१ व कलम ३५५ मध्ये केलेला आहे. मार्गदर्शक तत्वे सामाजिक, राजकीय, आर्थिक व आंतरराष्ट्रीय स्वरुपाचे आहेत. यात कल्याणकारी राज्याचा विकास करणे, समान न्याय, मोफत कायदा सहाय्यता, ग्रामपंचायतीची स्थापना, काम करण्याचा, शिक्षणाचा, लोकसहभाग, प्रसुतीच्या वेळी मदत, कामगारांसाठी भविष्य निर्वाह निधी, कारखान्यातील व्यवस्थापनात कामगार सहभाग, समान नागरी कायदा, मुलीसाठी मोफत व अनिवार्य शिक्षणाची सोय, अनुसूचित जाती जमाती व इतर मागासवर्गीयासाठी शिक्षण, सामाजिक आरोग्य सुधारणे, कृषी व पशुपालन, पर्यावरण रक्षण संवर्धन, जंगले वन्यप्राणी यांचे रक्षण, राष्ट्रीय स्मारके, वास्तुचे रक्षण करणे, कायदे मंडळ व कार्यमंडळाचे विभाजन, आंतराष्ट्रीय शांतता व सुरक्षिता निर्माण करणे. इ. महत्वपूर्ण विषयाचा समावेश राज्यकर्त्यासाठी मार्गदर्शक तत्वामध्ये केलेला आहे. या सर्व तरतूदीचा अभ्यास केल्यास भारत मानवी अधिकारासाठी स्वर्ग किंवा नंदनवन असल्याचे दिसते. भारता शेजारील देशात नागरिकांच्या हक्काची पडतारणा किंवा संरक्षण होत नसल्याने लाखो लोक भारताच्या आश्रयाला आले आहेत. त्यांना भारताने नागरिकत्व बहाल केलेले आहे.

भारत आणि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग :

भारतात हा आयोग मानवी हक्काचा पहारेकरी म्हणून काम करतो. मानवी हक्कास संरक्षण देण्यासाठी राष्ट्रीय पातळीवर मानवी अधिकार आयोगा संबंधीचा अध्यादेश राष्ट्रपतीने २८ डिसेंबर १९९३ मध्ये पारित केला. जो राष्ट्रीय मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम १९९३ या नावाने ओळखण्यात येतो. या आयोगाची अमंलबाजवणी १ मार्च १९९४ रोजी करण्यात आली. या आयोगात एक अध्यक्ष व सात सदस्य असतात यांची नेमणूक राष्ट्रपतीद्वारे होते. सर्वोच्च न्यायलयाचे मुख्य न्यायधिश या आयोगावर असतात. या आयोगाचे पहिले अध्यक्ष रंगनाथ मिश्रा व वर्तमान अध्यक्ष न्यायमुर्ती अरुण कुमार मिश्रा हे आहेत व राज्यपातळीवर राज्यआयोगाचे १ अध्यक्ष व इतर सदस्य असतात. उच्च न्यायालयाचे सेवानिवृत्त न्यायधिश या आयोगावर असतात. राष्ट्रीय मानव अधिकार कायद्यानुसार प्रत्येक राज्याने आपल्या राज्यात राज्यमानवाधिकार हा आयोग स्थापन केला. महाराष्ट्रात मानवी अधिकार आयोगाचे कार्यालय मुंबई येथे आहे. मानवाधिकार आयोग मानवी अधिकाराच्या उल्लघंनाच्या तक्रारीची चौकशी करुन सामान्य व्यक्तीला न्याय मिळवून देण्यासाठी प्रयत्नशील असतो. भारतीय राज्यघटनेतील कलम १२ ते ३५ मधील मुलभूत अधिकारात आंतरराष्ट्रीय मानवी अधिकार प्रतिबिंबीत होतात. भारतीय राज्यघटनेने

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

नागरिकांना मुलभूत अधिकाराच्या संरक्षणासाठी सर्वोच्च न्यायालयामध्ये बंदी प्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, अधिकार प्रच्छा, उत्प्रेषण इत्यादी स्वरुपात दाद मागण्याचा अधिकार बहाल केला आहे. या व्यतिरिक्त मानव अधिकाराच्या संरक्षणासाठी व अंमलबजावणीसाठी गेल्या ७ दशकापासून विविध कार्यक्रम, योजना, शिबिर राबविली गेली. सामाजिक, सांस्कृतिक योजना आखताना, मानव अधिकाराचा संवेदनशिलतेने विचार केला जातो. १९९७ साली भारताने क्रूर आणि अमानवी वागणूक शिक्षेविरुध्द जागतिक ठरावावर स्वाक्षरी केली. यामुळे भारताची मानवी अधिकाराची संरक्षणासंबंधी आत्मियता व बांधीलकी स्पष्ट होते. मानवी अधिकाराच्या संरक्षणाच्या दृष्टीने भारताने उचलेले हे एक महत्वपूर्ण पाऊल आहे.

भारतात मानवी अधिकाराबाबत अनेक समस्या व आवाहने आहेत यामध्ये गरीबी, बेरोजगारी, दारिद्र, स्त्रियांच्या मानव अधिकारचे उल्लंघन, वाढती लोकसंख्या, शासन-प्रशासन-नागरीक व स्वयंसेवी संस्थेची उदासिनता, अज्ञान, अंधश्रध्दा, कर्मकांड, सामाजिक नितीमुल्याची घसरण, अनावश्यक गोष्टीवर प्रचार व प्रसार माध्यमाचा भर, महत्वाच्या प्रश्नाकडे दुर्लक्ष, समाजात वाढलेले पाश्चत्याचे, चंगळवादाचे अंधानुकरण, औद्योगिकरण, दहशतवाद, नक्षलवादी कृत्य आदी आवाहानाचा प्रामुख्याने समावेश होतो.

मानवी अधिकाराचे महत्त्व :

मानवी अधिकारांना मानवी जीवनामध्ये अतिशय महत्व आहे. मानवी अधिकार अबाधित राहावेत, मनुष्याला स्वतःच्या सर्वांगीण विकासासाठी उपभोग घेता यावा यासाठी कायद्याचे संरक्षण महत्वाचे आहे. भारतात मानवी अधिकाराच्या अंमलबजावणीच्या दृष्टीने राष्ट्रीय व राज्यीय मानवी हक्क आयोग, मानवी हक्क न्यायालय, राष्ट्रीय अल्पसंख्य आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जाती-जमाती आयोग स्थापन केले आहेत. स्वातंत्र्योत्तर काळात द्विभार्या प्रतिबंधक कायदा (१९५६), हुंडा प्रतिबंधक कायदा (१९६१), भ्रृणहत्या प्रतिबंधक कायद (१९७२) कौटुंबिक हिसांचार विरोधी कायदा (२००५) असे अनेक कायदे केलेले आहेत. मानवाधिकारामुळे मुलभूत अधिकाराचे इतराकडून होऊ नये कायद्याने संरक्षण मिळते. समाजात सर्व व्यक्तींना समाज अधिकार, संधी असल्याने जात, धर्म, वंश, पंथ, लिंग, अशा आधारावर भेदभाव होत नाही. अल्पवयीन मुलीना फुस लावून आणि जबरदस्तीने वेशा व्यवसायाला पळवून नेऊन ढकलले जाते अशी वाहतूक व विकृयाला रोखण्यासाठी मानवी अधिकार महत्वाचे आहेत. विशेष करुन महिलांच्या

Kholeshwar Mahavidyalaya * Ambajogai, Dist. Beed

सक्षमीकरणाच्या दृष्टीने ही मानवी अधिकार महत्वाचे असल्याचे दिसून येते. अल्पसंख्याकांना भाषा, धर्म, वंश आधारे असुरक्षिततेची भिती, काळजीच्या दृष्टीने ही मानवी हक्काचे महत्व आहे. अज्ञान, निरक्षरता दुर करण्यासाठी प्राथमिक शिक्षण, अज्ञान, निरक्षरता दुर करण्यासाठी प्राथमिक शिक्षण, रात्र शाळा, प्रौढासाठी साक्षरता वर्ग सुरु केल्याने मानवी हक्काची जागृती वाढते. बालकांचे शिक्षण, बाल कामगार, या मानवी हक्काने महत्व प्राप्त झाले आहे. आपली प्राचीन संस्कृती जपवणूकीच्या दृष्टीने तसेच वृद्ध, दिव्यांग आजारी व्यक्तीला मोफत औषधे, निवृत्तीवेतन, नैसर्गिक व मानव निर्मिती संकटकाळी मदत यासाठी मानवी अधिकारास महत्व प्राप्त झाले आहे. मानवी अधिकार नाकारणे, हिरावून घेणे, शोषण करणे हे विनाशाला आमंत्रण देण्यासारखे आहे. जागतिक शांतता सुव्यवस्था, विकास मानवी अधिकारावर अवलंबून आहे. समाजातील दुर्बल घटकांचा विकास, असंघटीत लोकांना मदत, सुरक्षा बेकारी दूर करण्यासाठी बेकारांना समाजात सन्मानाने जगण्यासाठी हाताला काम मिळण्यासाठी रोजगार, नौकरी, व्यवसाला चालना देण्याचे प्रयत्न करते. जगातील राष्ट्राराष्ट्रात होणारे युध्द, युध्द कैद्यांच्या छळ होवू नये, युद्धा काळात मानवी हक्काची जपवणूक व्हावी, जागतिक शांतता निर्मिती व टिकवण्यासाठी मानवी अधिकाराचे महत्व अनन्यसाधारण आहे. थोडक्यात जीवनाच्या सर्व क्षेत्रात मानवी अधिकारांना मान्यता व संरक्षण देऊन एक मानवतावादी व आदर्श समाज निर्माण करणे.

समारोप :

मानवी अधिकार जन्माने नैसर्गिकरित्या प्राप्त होतात प्राचीन काळापासून मानव सुखासाठी धडपडत आला आहे. मानव प्राचीन काळापासून मानवी अधिकारासाठी जागृत आहे. प्राचीन सिंधू संस्कृती, जगातील प्राचीन संस्कृती वैदिक काळपासून अखिल मानवमात्राच्या सुखाचा, हिताचा, विकासाला व समान अधिकाराचा विचार प्राचीन मध्ययुगीन व आधुनिक काळात मानवी अधिकारासाठी ऋषी, मुनी, संत साहित्यीक, महापुरुष, समाजसुधारक राजकीय नेते यांनी प्रयत्न केले आहेत. जगामध्ये वेळोवेळी मानवी अधिकार हिरावून घेण्याचा प्रयत्न झाला तेव्हा त्याला विरोध झाला . मानवी अधिकाराचा इतिहास हा संघर्षाचा इतिहास आहे. प्राचीन काळातील राजेशाही पासून आज कल्याणकारी राज्यापर्यंतचा इतिहास हा संघर्ष, आंदोलने, क्रांत्या, परिषदा, सनदा,संविधान, कायदेयाने भरलेला आहे. मानवी अधिकाराच्या निगडीत हा संपूर्ण इतिहास आहे. यावरुन मानवी

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

अधिकाराचे महत्व मानवी जिवनात किती महत्वपूर्ण आहे. मानवी अधिकाराविना मनुष्य जीवन स्वंयपूर्णला मानवी अधिकार महत्वपूर्ण आहेत. यातून अधिकार मानवाचे कल्याण होणार आहे.

संदर्भसुची :

१) डॉ.शैलेंद्र देवळाणकर-समकालीन जागतिक राजकारण: प्रमुख प्रश्न, विद्या बुक्स पब्लीशर्स, औरंगाबाद.

२) डॉ.सुधाकर जोशी- भारताचे शासन व राजकारण, विद्या प्रकाशन, औरंगाबाद (जून-१९९९)

३) प्रा.अशोक नाईकवाडे- मूलभूत राज्यशास्त्रीय संकल्पना, कैलाश प्रकाशन, औरंगाबाद (जून-२००९)

४) प्रा.नंदकुमार भारंबे - मानवी हक्क व समाज, निराली प्रकाशन,

५) डॉ.धनजंय आचार्य - भारताचा इतिहास, श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर.

६) अँड- अभया शेलकर- मानवी हक्क संरक्षण अधिनियम, १९९३.

७) डॉ.वसंत रामपूरकर - आंतरराष्ट्रीय संबंध, मंगेश प्रकाशन, नागपूर-२००६.

८) दै.वृत्तपत्रे - लोकसत्ता सकाळ, पुण्यनगरी, लोकमत, दिव्यमराठी इ.

17 सप्टेंबर - 2021

गौतम गायकवाड

प्रा. गौतम गायकवाड हे गेल्या तीस वर्षांपासून आंबेडकरी विचार लोकमाणसात रुजविण्यासाठी सातत्याने लिहित आहेत.

आंबेडकर चळवळीतील राजकीय नेते, विचारवंत आणि साहित्यिक यांच्या जीवन-कार्यावर भरपूर लिखाण झाले आहे. त्या मानाने आंबेडकरी चळवळीतील शिलेदार व कार्यकर्ते यांच्या जीवन-कार्यावर म्हणावे तेवढे लेखन झाले नाही. ही उणीव 'प्रज्ञासूर्याचे सूर्यपुत्र' या ग्रंथाने भरून निघेल.

प्रज्ञासूर्याच्या सूर्यपुत्रांच्या गौरवगाथा वाचून अभ्यासकांनी, लेखकांनी, विचारवंतांनी आपापल्या परिसरातील शिलेदार, कार्यकर्ते यांच्यावर लेखन केले पाहिजे. ते लेखन आंबेडकरी चळवळीचे ऐतिहासिक दस्ताऐवज ठरेल. उद्याच्या आंबेडकरी चळवळीचा इतिहास लिहिण्यासाठी अशा ग्रंथांचा उपयोग होतो.

हे सेनापती, शिलेदार, कार्यकर्ते आंबेडकरी चळवळीचे आधारस्तंभ होते. वंचित समाजाचे नायक व त्यांच्या संरक्षणाचे कवच होते. त्यांनी आपले संपूर्ण आयुष्य आंबेडकरी चळवळीला समर्पित केले. अशा कर्तृत्ववान व्यक्तिच्या कार्याचा परिचय पुढील पिढीला प्रेरणादायी ठरेल, म्हणून अशा शिलेदारांच्या जीवन-कार्याची ओळख 'प्रज्ञासूर्याचे सूर्यपुत्र' या ग्रंथात प्रा.गौतम गायकवाड यांनी करून दिली आहे.

'प्रज्ञासूर्याचे सूर्यपुत्र' हा ग्रंथ अत्यंत मौल्यवान आहे. प्रत्येक आंबेडकरी अनुयायांनी वाचलाच पाहिजे, असे मला वाटते.

- प्रा.एस.के.जोगदंड
अंबाजोगाई

शिवानी प्रकाशन, पुणे

9 789389 428667

• प्रज्ञासूर्याचे सूर्यपुत्र • प्रा. गौतम गायकवाड • शिवानी प्रकाशन, पुणे

प्रज्ञासूर्याचे सूर्यपुत्र

प्रा. गौतम गायकवाड

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

प्रज्ञासूर्याचे सूर्यपुत्र

PRADNYASURYACHE SURYAPUTRA

या पुस्तकातील कोणताही मजकूर पुन्हा प्रकाशित करण्यासाठी
लेखकाने ज्यांना अधिकार दिले आहेत, त्यांची लेखी परवानगी घेणे बंधनकारक आहे.
लेखकाने स्वत:चे व अधिकारकर्त्यांचे अधिकार राखून ठेवलेले आहेत.

प्रकाशक
शिवानी प्रकाशन,
डी-८, पंकज पार्क, सर्व्हे नं.१६६,
माळवाडी हडपसर, पुणे
मो.९०११३२०६५९
अक्षर जुवळवणी
साऊ हर्षवर्धन मुंढे
आंबाजोगाई जि.बीड.
मो.नं. ९९६०८५६५६०

© **वर्षा गौतम गायकवाड**
मो.८००७२७२४८३/९३७०९११८७४
प्रथमावृत्ती-१७ सप्टेबर २०२१
मराठवाडा मुक्तीसंग्राम दिन.
मुद्रक : शिवानी प्रिंटर्स, पुणे
मुखपृष्ठ संकल्पना: प्रा.गौतम गायकवाड
मुखपृष्ठ: हर्षवर्धन मिलिंद मुंढे
किंमत : ३५०/- रू.
ISBN : 978-93-85426-66-7

आंबेडकरी
चळवळीतील
शिलेदारांना...
अर्पण.

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

आंबेडकरी घराण्याच्या त्यागाची जाणीव तरी निर्माण करून दिली. आज पेरणी केली आहे भविष्यात निश्चित हे पीक आल्याशिवाय राहणार नाही. पण महाडचे पाणी या जमिनीत सोडून पीक घेणारे शिलेदार लाभले पाहिजे.

माझ्या सोबत सातत्याने राहून सहकार्य व मार्गदर्शन करणारे प्रा.बी.एस.बनसोडे, बी.एच.कांबळे साहेब आणि जगन बापू सरवदे हे पाठीशी उभे राहले नसते तर हे लेखन शक्य झाले नसते. त्यांचे ऋण न मानता त्यांच्या समवेत राहण्याची दीर्घकाळ मला संधी अशीच लाभेल नव्हे मी त्यांच्या समवेत आहे. ते माझ्या समवेत आहेत, म्हणजेच ते आंबेडकरी घराण्याशी एकनिष्ठ राहणाऱ्या माणसा समवेत राहून आपली एकनिष्ठता त्यांनी सिद्ध केली आणि मला प्रेरणा दिली. त्यांच्या अनुभवाचा मला खूप फायदा झाला. यापुढे आम्ही मिळून काम करणार आहोत. फक्त इथे औपचारिकता म्हणून ऋण व्यक्त करतो. तसेच प्रा.एस.के.जोगदंड हे माझे आधारवड आहेत.

तसेच अंबाजोगाईच्या परिसरातील लोकांनी माझ्यावर प्रचंड प्रेम केले. कोणताही कार्यक्रम असो, आंबेडकरी विचारांच्या लोकांनी मला प्रतिसाद दिला. आंबेडकरी विचाराला गतिमान करण्यास सहकार्य केलात. गेल्या वीस वर्षापासून डोकं भरून घेतले आहे. ज्ञानाने आणि अनुभवाने शहाणे झाला आहात. ते शहाणपण निश्चित कृतीत उतरून २०२४ ला आपल्याच माणसाला मतदान कराल नव्हे करावे. आपल्या दारावर किंवा गल्लीत कोणताही पुढारी येऊद्या. तो प्रस्थापित असो त्यांचे भरभरून स्वागत करा. जे देतील ते घ्या. त्यांच्यासोबत रात्रंदिन रहा पण मतदान मात्र आपल्याच माणसांना केलेच पाहिजे. आपली शक्ती दाखवलीच पाहिजे. ३ % बुद्धीवंत राज्यकर्ते होऊ शकतात तर १३% बुद्धीवंत का राज्यकर्ते होऊ शकत नाहीत. निश्चित होणार आहात.

हे पुस्तक प्रत्येकांनी विकत घेवून वाचावे, माझे लेख प्रकाशित केलेले लोप्रबोधनचे संपादक चेतन शिंदे, दै. प्रजापत्राचे संपादक सुनिल क्षीरसागर, दै.विवेकसिंधूचे संपादक नानासाहेब गाठाळ यांचा अत्यंत ऋणी आहे.

या ग्रंथातील शिलेदारांवर लेखन करण्यासाठी साह्य केलेल्या कार्यकर्तेचा मी अत्यंत ऋणी आहे. माझे मित्र आणि घरातील पत्नी-मुलं सर्वांचा ऋणी आहे. अक्षरजुळवणी करणारा माझा विद्यार्थी हर्षवर्धन मुंढे तसेच प्रकाशक शिवानी प्रकाशन, पुणे यांचाही ऋणी आहे.

- प्रा.गौतम गायकवाड, अंबाजोगाई

अनुक्रमणिका

	पृ.क्र.		पृ.क्र.
०१. दादासाहेब गायकवाड	०१	१९. प्रा.अविनाश डोळस	११२
०२. भय्यासाहेब आंबेडकर	०५	२०. प्रा.अविनाश डोळस	११८
०३. मीरताई आंबेडकर	१०	२१. हनुमंत उपरे	१२५
०४. ॲड्.बाळासाहेब आंबेडकर	१३	२२. साहेबराव देवराव पोटभरे	१३४
०५.ॲड्. प्रकाश आंबेडकर	१९	२३. शाम तांगडे	१४१
०६. व्हि.जे.आरक	२५	२४. आनंदराज आंबेडकर	१५१
०७. व्हि.जे.आरक	२९	२५. मा.सो.कांबळे	१५८
०८. वामनदादा कर्डक	३१	२६. श्रीराम सोनवणे	१६१
०९. वामनदादा कर्डक	३५	२७. श्रीपती शिंदे	१६८
१०. ज.वी.पवार	४७	२८. सोपान बनाजी खांडके	१७४
११. राजा ढाले	५८	२९. निवृत्ती पांडुरंग वाघमारे	१७८
१२. नामदेव ढसाळ	५९	३०. संभाजी जोगदंड	१८१
१३. डॉ. सुखदेव थोरात	७३	३१. देविदास सोनवणे	१८७
१४. प्रा. माधव मोरे	८३	३२. देविदास सोनवणे	१९४
१५. डॉ.गंगाधर पानतावणे	८८	३३. ॲड्. एकनाथ आवाड	२००
१६. डॉ. यशवंत मनोहर	९१	३४. डॉ.द्वारकादास लोहिया	२०५
१७. प्रा.एस.के.जोगदंड	१०१	३५. प्राचार्या.डॉ. विजया इंगोले	२०९
१८. प्रा.एस.के.जोगदंड	१०८	३६. ॲड्.अनंत जगतकर	२१२

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

chapter
26 नोव्हें. 2021

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed

२००० नंतरची कविता : स्वरूप आणि आकलन

संपादक
डॉ. मारोती कसाब
मराठी विभाग, महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपूर जि. लातूर

सहसंपादक
डॉ. अनिल मुंढे
मराठी विभाग, महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपूर जि. लातूर

सिद्धी पब्लिकेशन हाऊस, नांदेड.

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

ISBN No. 978-81-953976-4-8

२००० नंतरची कविता : स्वरूप आणि आकलन

संपादक

डॉ. मारोती कसाब

सहसंपादक

डॉ. अनिल मुंढे

प्रकाशक

सिद्धी पब्लिकेशन हाऊस

६२४, बेलानगर, भावसार चौक,

तरोडा (खु.) नांदेड - ४३१ ६०५.

मो. ९६२३९७९०६७

मुद्रक

अनुपम प्रिंटर्स, श्रीनगर, नांदेड.

मो. ९९७५३२४४३७

प्रथमावृत्ती : २६ नोव्हेंबर २०२१

सर्वाधिकार : महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपूर

मुखपृष्ठ : संतोष घोंगडे

अक्षरजुळवणी : डॉ. राजेश उंबरकर

मूल्य : ३००/-

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	प्रकरणाचे नांव	लेखक	पृ. क्र.
०१.	संपादकीय मनोगत	डॉ. मारोती कसाब डॉ. अनिल मुंढे	०६
०२.	प्रस्तावना	प्राचार्य डॉ. वसंत बिरादार	०८
०३.	'२००० नंतरची मराठी कविता'	प्रा. डॉ. प्रतिमा सुरेश जाधव	१७
०४.	"प्रकाशपर्वाचा साक्षीदार असलेली उजेडाची कविता"	डॉ. युवराज मानकर	२६
०५.	कवी भाऊ भोजने यांचा 'निळा प्रक्षोभ'	डॉ. शत्रुघ्न जाधव	४०
०६.	'संदर्भ शोधताना' कवितासंग्रहातील कवितांमधून येणाऱ्या सामाजिकतेचा अभ्यास	प्रा.उन्मेष शेकडे	५०
०७.	स्त्री साहित्याची वैचारिक पार्श्वभूमी आणि २००० नंतरच्या कवयित्रीच्या कवितेतील आत्मभान	प्रा. गौतम गायकवाड	५७
०८.	गावगाड्याचा बदलता अवकाश शब्दबद्ध करणारा काव्यसंग्रह: 'बोलावे ते आम्ही'	डॉ.सुरेश शिंदे	७३
०९.	सामाजिक समतेचा पुरस्कार करणारा काव्यसंग्रह : आरंभबिंदू	डॉ. पंजाब शेरे	८०
१०.	विषमतेविरुद्ध बंड पुकारणारी कविता: 'आता क्रांती दूर नाही'	डॉ. संतोष चंपती हंकारे	८८
११.	जगदीश कदम यांच्या कवितेतील व्यक्तीरेखा	प्रा. गोरोबा शेषराव रोडगे	९७
१२.	२००० नंतरच्या आदिवासी कवितेतील भाकरीचे प्रश्न	डॉ. राजेश धनजकर	१०२
१३.	२००० नंतरच्या कवयित्रींच्या कवितेतील जागतिकीकरणाचे चित्रण	डॉ. रामकिशन दहिफळे	११०
१४.	२००० नंतरच्या ग्रामीण कवितेचे बदलते स्वरुप	डॉ. संजय खाडप	११९

Kholeshwar Mahavidyalaya Ambajogai, Dist. Beed

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

१५.	कृषी कृषक जीवन वेदना- "भोग सरु दे उन्हाचा"	डॉ. सुभाष सदाशिव पुलावळे	१२२
१६.	२००० नंतरच्या शेतकऱ्यांचे जीवन चित्रण : विशेष संदर्भ 'कुणब्याच्या पोरा'	डॉ. बालाजी विठ्ठलराव शिंगोळे	१३०
१७.	'बोलावे ते आम्ही': ग्रामीण जीवनाची गाथा	डॉ. मारोती बालासाहेब भोसले	१४०
१८.	'शिंपल्यातील मोती' : प्रबोधनाचा जागर घालणारी कविता	डॉ. मारोती कसाब	१४९
१९.	जागतिकीकरण आणि २००० नंतरची दलित कविता	डॉ. सूर्यकांत हरिश्चंद्र गिते	१५५
२०.	२००० नंतरच्या कवितेतील वास्तव दर्शन	डॉ. श्रीराम मारोतराव कऱ्हाळे	१६४
२१.	नातीगोती सांभाळत सुगीचे दान देणारी कविता : "सुगीभरल्या शेतातून"	शरद ठाकर डॉ. अशोक पाठक	१६८
२२.	उपेक्षितांच्या वेदनेचा आशावादी हुंकार - मारोती कसाबांची कविता	डॉ. प्रल्हाद भोपे	१७४
२३.	२००० नंतरच्या कवितेतील प्रतिमा विशेष संदर्भ श्रीकांत देशमुख यांची कविता	डॉ. शिवसांब कापसे	१८२
२४.	कविता महाजनांच्या 'मृगजळातील मासा' या काव्यसंग्रहातील प्रतिमा	वीणा गुलदेवकर	१८७
२५.	मराठवाड्यातील मराठी ग्रामीण कवितेतील अभिव्यक्ती	साईप्रसाद मधुकर पंडीत	१९३
२६.	२००० नंतरच्या आदिवासी कवितेतील एकलव्य	ज्ञानेश्वर नगाजी भडंगे	१९९
२७.	२००० नंतरचे साहित्य : कलाकृतीच्या अनुषंगाने	प्रा. बालाजी जी. गायकवाड	२०५
२८.	वसंत बहाराची अपेक्षा असलेला काव्यसंग्रह : विकॉज वसंत इज कमिंग सून	डॉ. राजकुमार किशनराव यल्लावाड	२११
२९.	२००० नंतरच्या काव्यातील मिथक संकल्पना	आश्लेषा सचिन कुंभार	२१९

३०.	दोन हजार नंतरच्या सामाजिक कवितेचे स्वरूप	संतोष मारोती चमकुरे	२२८
३१.	२००० नंतरच्या कष्टकर शेतकरी समूह जीवनाचा वेध घेणारी कविता: हिमाळा	बाळासाहेब निवृत्ती कराड	२३२
३२.	२००० नंतरची मराठी बालकविता : मराठवाड्यातील बालकवितेच्या संदर्भात	डॉ. गजानन अनंता देवकर	२३९
३३.	मेलं नाही अजून आभाळ : शेतकऱ्यांना जगण्याचे बळ देणारी प्रेरक कविता	डॉ. विजयकुमार शिवदास ढोले	२४७
३४.	इंद्रजित भालेरावांच्या 'टाहो' काव्य संग्रहातील शेतकऱ्यांचे आक्रंदन	डॉ. दादाराव गुंडरे	२५४
३५.	२००० नंतरची आदिवासी कविता	शोभा विठ्ठल सरकुंडे	२६४
३६.	शिवारातलं पाणी काव्यसंग्रहातील शेतकऱ्यांचे जीवन चित्रण करणाऱ्या कविता	अशोक हणमंतराव पाटील आडसूरकर	२७०
३७.	शेतकऱ्याच्या जीवनात प्रकाश पेरणारा : कुळवाडी अभंग	प्रा. प्रमोद भ. इंगोले	२७८
३८.	२००० नंतरच्या विद्रोही कवितेतील सामाजिक जाणिवा (विशेष संदर्भ : मारोती कसाब यांची कविता)	भरत शिवाजीराव गायकवाड	२८५
३९.	समकालीन अस्वस्थ वर्तमानाचा अचूक वेध घेणारी कविता: 'माझ्या वर्तमानाची नोंद'	प्रा. बालाजी गणपतराव भंडारे	२९२
४०.	माणसाला अंतर्मुख करणारी कविता: कोरा कागद निळी शाई	प्रा. ज्ञानेश्वर गायकवाड	३०१
४१.	२००० नंतरच्या आंबेडकरवादी कवितेची वाटचाल	धनंजय पांडुरंग सोनकांबळे	३१०
४२.	२००० नंतरच्या मराठी कवितेतील दलित जाणिवा	प्रा. डॉ. अनिल मुंढे	३१४

Principal
Kholeshwar Mahavidya-
Ambajogai, Dist. Beed

सन २००० नंतरची जी समाज वास्तवाची सूक्ष्म वळणे वरील कवितासंग्रहातून शब्दबध्द झालेली आहेत. यामुळे यावरील कविता संग्रहातील अनुभव मांडणी सन २००० नंतरच्या भारतीय समाज वास्तवाचा अभ्यास करण्यास उपयुक्त अशी आहे.

आदर्श समाज ही राष्ट्राची शक्ती असते ! राष्ट्राच्या विकास प्रक्रियेत आदर्श समाजाचे योगदान मोलाचे असते. त्यामुळे ज्या ज्या वेळी समाजातील आदर्श मूल्यं संपुष्टात येवू लागतात. त्या त्या वेळी साहित्यिक कलावंतानी आदर्श मानवी मूल्यांची जोपासना कलाकृतीतून करुन समाजाची सामाजिक पातळीवरची उदात्ततेची उंची वाढविणे हेच जागृतीच्या दृष्टीने मोलाचे आहे.

संदर्भ :

१ 'सदर्भ शोधताना' : प्रदीप पाटील, प्रकाशन- सगत प्रकाशन, प्रथमावृत्ती १० सप्टेंबर २००२, पृष्ठ क्रमांक-५
२. 'सदर्भ शोधताना' - पृष्ठ क्रमांक- ०९
३. 'सदर्भ शोधताना' - पृष्ठ क्रमांक- १५
४. 'सदर्भ शोधताना' - पृष्ठ क्रमांक- २२
५. 'सदर्भ शोधताना' - पृष्ठ क्रमांक- २८
६. 'सदर्भ शोधताना' - पृष्ठ क्रमांक- ३३
७. 'सदर्भ शोधताना' - पृष्ठ क्रमांक- ५०
८. 'सदर्भ शोधताना' - पृष्ठ क्रमांक- ५९
९. 'सदर्भ शोधताना' - पृष्ठ क्रमांक- ६४
१०. 'कविता आणि प्रतिमा' : सुधीर रसाळ, प्रकाशक- श्री.पु.भागवत, प्रकाशन- मौज प्रकाशन गृह मुंबई, पहिली आवृत्ती-१९८२, पृष्ठ क्रमांक- ५३
११. 'साहित्याचा अन्वयार्थ' : नागनाथ कोत्तापल्ले, प्रकाशिका-सौ. उषा मुळाटे, प्रकाशन- स्वरुप प्रकाशन, औरंगाबाद, पहिली आवृत्ती- सप्टेंबर-१९९६

***

स्त्री साहित्याची वैचारिक पार्श्वभूमी आणि २००० नंतरच्या कवयित्रीच्या कवितेतील आत्मभान

Mahavidyalaya * Ambajogai, Dist. Beed

प्रा. गौतम गायकवाड

अंबाजोगाई

जगात माणूस सर्वश्रेष्ठ आहे. मानव हा धरतीचा निर्माता आहे. हे जग माणसांसाठी आहे आणि मानसात स्त्री सर्वश्रेष्ठ आहे. स्त्री आणि पुरूष दोघेही समान आहेत. किंबहुना स्त्री पुरूषापेक्षा श्रेष्ठ आहे. असे महत्मा फुले यांनी म्हटले आहे. स्त्री या विश्वाची जननी, जगाची निर्माती, सर्जक आहे. भारतात मातृसत्ता पद्धती होती. बुद्धकाळात स्त्रियांची स्थिती उच्च दर्जाची होती. स्त्रियांच्या! विविध कार्यकर्तृत्वाचा, प्रगतीचा, शौर्याचा, विकासाचा, समृद्धीचा इतिहास गौरवशाली आहे. प्राचीन काळापासून ते आजपर्यंच्या इतिहासात तिने आपल्या कर्तबगारीचा ठसा उमठवलेला आहे. अध्यात्मापासून ते विचारवंतापर्यं, कौटुंबिक जीवनापासून ते रणागणांपर्यंत, समान्यांपासून ते राज्यसत्तेपर्यंत कर्तृत्वत गाजवले आहे. भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात आणि देशाच्या सर्व क्षेत्रात, जडण-घडणीत तिचे योगदान मोलाचे आहे. स्त्रिया भक्तीच्या क्षेत्रात उन्नती करून घेतल्या, सेदाभावी संस्थेत कार्यरत राहिल्या. स्वातंत्र्य चळवळीत योगदान देणाऱ्यारणरागिणी होत्या, संगीत, नृत्य, साहित्य कला आदी क्षेत्रात प्रगतीपथावर पोहोचलेल्या होत्या. त्यांच्या सेवेचा, त्यागाचा, समर्पणाचा, सर्वशक्तीचा, गुणांचा, सर्वस्व गौरवाचे दर्शन कालसुसंगत रूपाने घडत आले आहे. स्त्रिया राज्यकर्त्या, क्रांतीकारक, सन्यासनी, पराकृमी, विचारवंत, उत्तम साहित्यिक, प्रशासक होत्या. त्या कोणत्याही काळात, क्षेत्रात पुरूषांच्या बरोबरीने कार्यरत राहिल्यात. त्यांच्या कार्याकर्तृत्वाचा आलेख विविध क्षेत्रात विस्तारित गेलेला आहे. जीवनाच्या सर्व क्षेत्रात त्यांनी गुणवत्ता सिद्ध केलेल्या आहेत. या स्त्रियांच्या कर्तृत्वाचा उल्लेख 'गाथा सप्तर्षी, सुक्तीमुक्तावली, आश्वालायन ग्रहयसूत्र, यज्ञमंगोय, पाणिनी, स्तुतिपाठक, मन्नारूद्रास विलासम, उषापरिणय, भारत मारणम' आदी ग्रंथातून भारतीय थोर स्त्रिया आलेल्या आहेत.

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

प्राचीन काळापासून ते आजपर्यंत संस्कृती संवर्धनात आणि संस्कृति रक्षणात स्त्रियांचे योगदान मौलिक आहे. काळाच्या विशाल पटलावर कार्यकर्तृत्वाची क्षितीजे विस्तारित आलेल्या आहेत. त्यामध्ये मातृत्व सर्वश्रेष्ठ आहे. उपनिषेधात, धर्मसुत्रात, महाभारतात, शांतीपर्वत ऋषींनी मातेचा सर्वश्रेष्ठ म्हणून गौरव केला आहे. देवत्वाची प्रथम कल्पना स्त्रियांमध्ये पाहिली गेली आहे. अनेक रूपांत, नामांत आदी रूपाने स्त्रियां पुजलेल्या आहेत. वेदकाळात मातृत्वदेवता, विश्वजननी म्हणून आद्यशक्ती स्त्रिया आहेत. स्त्री ही विशाल हृदयाची, अर्धांग, सर्वज्ञ आहे. ज्या देशात, संस्कृतीत स्त्रियांचा मान, सनमान, प्रतिष्ठा ठेवली जाते, आदर केला जातो. तिथे देवता रमतात, नांदतात असं म्हटले जाते. एकंदरीत स्त्रियांना सर्वोच्च असे स्थान देण्यात आले आहे.

पुढे कालोघात मातृसत्ताक पद्धती मागे पडून पितृसत्ताक पद्धती आली आणि पुरूषांनी आपल्या बलाच्या जोरावर आदीशक्ती गाजवून स्त्रियांना आपल्या अंकीत ठेवले. तसे नियम तयार केले. त्या नियमात बसवले, जगातील सर्व नियम, धर्मग्रंथ, ग्रंथ परूषांनी बहुसंख्य लिहिले. प्रत्येक क्षेत्रात तिला दुय्यम स्थान दिले. तिला तिच्या अस्तित्वाची, गुणांची, विद्वत्तेची, शौर्याची विविध क्षेत्रातील कर्तृत्वाची जाणीव होऊ दिली नाही. स्त्रियांचे अनेक क्षेत्रात मोठ्या प्रमाणात शोषण झाले. या स्त्रियांना प्रत्येक क्षेत्रात दुय्यम स्थान देऊन तिचे स्वतंत्र माणूस म्हणून अस्तित्वच उभे राहू दिले नाही. स्त्रियांना विविध बंधनात, जोखडात बांधून टाकले. स्त्री ही माणूस आहे म्हणून विचारच केला नाही. तुम्ही माणूस आहात उलट पुरूषांपेक्षा सर्वश्रेष्ठ आहात हे महात्मा फुले यांनी सांगितले. बुद्धाने सर्वश्रेष्ठ स्थान दिले. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी भारतीय स्त्रियांच्या हक्काचा जाहिरनामा 'हिंदू कोडबील'तून मांडला. पुरूषांप्रमाणे स्त्रियांना स्वातंत्र्य दिले. स्त्रिया आणि अस्पृश्यांना गुलाम म्हणून वागवले. याची जाणीव फुले-शाहू-आंबेडकर यांनी करून दिली. मानवाच्या दु:खाचे कारण अज्ञान हे बुद्धाने सांगितले. अविद्या हे कारण महात्मा फुले यांनी सांगितले. आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी शिका म्हटले. शिकले, तेव्हा सर्व क्षेत्रात शोषीत अस्पृश्य व स्त्रिया आपले स्थान शोधू लागल्या. अस्पृश्य वर्ग आणि स्त्रिया मोठ्या प्रमाणात शिक्षण घेऊ लागल्या आणि आपले स्वतंत्र अस्तित्व, स्थान प्रत्येक क्षेत्रात शोधू लागले. 'भारतीय संविधाना'ने स्त्रियांना स्वातंत्र दिले. स्त्रियांच्या स्वातंत्र्याचा, मुक्तीचा, अधिकाराचा,

त्यांच्या हक्काचा, न्यायाचा विचार फुले-शाहू-आंबेडकर यांनी केला. तसे वराहमिहीर, महात्मा बसवेश्वर, चार्वाक यांनीही केला. या महापुरूषांच्या विचारप्रेरणेतून स्त्रियांही मुक्या होत्या त्या बोलू लागल्या, शिकू लागल्या, लिहू लागल्या. अज्ञानापोटी जे दु:खी जीवन वाट्याला आले त्याचा त्या शोध घेऊ लागल्या. या स्त्रियां जीवन जगतांना जीवनात येणाऱ्या प्रसंगांना तोंड देत अनुभव घेत समजून घेत, मार्ग काढत, निरीक्षण करीत आत्मशोध घेऊ लागल्या. आणि त्याही अर्हंत पदापर्यंत जाऊन पोहचलेल्या आहेत. दु:खी जीवनावर विजय मिळवलेल्या सर्वोच्च पदावर विराजमान झालेल्या स्त्रिया आहेत.

स्त्रियांच्या वाट्याला आलेले दु:ख हे निसर्ग निर्मित नसून मानवनिर्मित आहे. ते वासना, इच्छा, अपेक्षा आदी तृष्णेतून निर्माण होते, त्यावर विजय मिळवता येतो. आर्य अष्टांगीक मार्गाने मानवी जीवनात परिवर्तन घडवून अणले. मानवी जीवनाला योग्य वळन लावून माणूस सुखी होऊ शकतो. मानवी मनातील विचारांच्या धारणा बदलून टाकण्याचे सामर्थ्य हे बुद्धतत्वज्ञानात आणि शिक्षणात आहे. विचारात आहे, साहित्यात आहे.

इंग्रज भारतात आल्यानंतर सर्वक्षेत्रात सुधारणा सुरू झाल्या आहेत. स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक दृष्टीकोन, लोकशाही, विवेकवाद या मूल्यांचा प्रभाव भारती व महाराष्ट्रीय समाजजीवनावर पडून असुलाग्र बदल झाला. तसाच बदल साहित्यातही झाला. एकूण सर्वच क्षेत्राचा चेहरा मोहरा बदलण्यास सुरूवात झाली. मानवी जीवनात परिवर्तन सुरू झाले. महात्मा फुले, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांनी स्त्रियांना गुलामीतून मुक्त करण्यासाठी स्त्रियांचे प्रबोधन केले. स्त्रिया व अस्पृश्य ही जागृत झाले, सर्वांसाठी शिक्षण खुले झाले. सर्वच क्षेत्रातील, विविध स्तरातील स्त्री-पुरूष शिक्षण घेऊन सर्वजन उन्नतीसाठी संघर्ष करू लागले. ज्ञानाचा उपयोग अन्यायमुक्त होण्यासाठी करू लागले तसेच लढण्याची उर्मी आली. शिक्षणामुळे स्त्री-पुरूष जागृत झाले. समानतेचा विचार करू लागले. फुले-आंबेडकरांनी अस्पृश्य आणि स्त्रियांमध्ये स्वाभीमान जागृत केला. विद्याभ्यास केले. माणूस म्हणून वागवले पाहिजे, माणसाला माणूसपण मिळवून देण्यासाठी संघर्ष करू लागले.

फुले-आंबेडकरी चळवळीने, विचाराने, तत्वज्ञानाने अस्पृश्य समाज व स्त्रियां जागृत झाला, शिकले, बोलू-लिहू लागले. त्यातून फुले-आंबेडकरी साहित्य जन्माला आले. प्रबोधनाचे, परिवर्तनाचे साधनम्हणून साहित्याकडे पाहिले गेले. तसेच स्त्रियां ही परिवर्तनाचे साधन म्हणून साहित्याकडे पाहू लागल्या. लेखण करू लागल्या. आम्हीही माणूस आहोत. माणूस म्हणून आम्हालाही सुखाने जगायचे आहे. सुखासाठी लागणाऱ्या मुलभूत साधनाचे वितरण झाले पाहिजे. स्वातंत्र्याचा अर्थ कळू लागला. लोककल्याणाकारी सत्ता हवी. नवसमाज हवा. तिथे कुणीही कुणाचे शोषण करणार नाही. सर्वांना सुखाने जगता, राहता येणारी एक नवी शोषणरहित समाजव्यवस्था भारतीय संविधानाच्या आधारे लोकशाहीत निर्माण करण्यासाठी स्त्रियां आघाडीवर राहिलेल्या आहेत. आपल्याला माणूसपण मिळावे म्हणून हक्कांसाठी, अधिकारांसाठी घटनात्मक मार्गाने संघर्ष करू लागल्या. सर्व क्षेत्रात माणूसपण अबाधित राहिले पाहिजे, अशी व्यवस्था निर्माण करण्यासाठी साहित्यलेखनाचा वापर करू लागल्या. स्त्रियांमध्ये आत्मभान आले. त्यांना त्यांच्या अस्मितेची जाणीव झाली. गुलामीविरूद्ध लढण्याला सज्ज झाल्या. साहित्य हे माध्यम, साधन म्हणून उपयोग करू लागल्या. माणुसकीच्या विरोधी असणाऱ्या विरूद्ध लढा देण्याची मानसिकता बनली. राज्यघटनेतील स्त्री-पुरूष समानता, स्वातंत्र्य, सामाजिक-आर्थिक समता, राजकीय, न्याय, प्रतिष्ठा, हक्कासाठी साहित्य साधनाच्या आधारे विचार मांडून अधिकार पदरात पाडून घेत माणूस म्हणून जगण्यासाठी साहित्य लेखन केलेल्या आहेत. साहित्य हे समाज जीवन बदलण्याचे साधन मानले. साहित्य हे सर्वश्रेष्ठ प्रगतीचे साधन, मानले. परिवर्तनाचे शास्त्र मानले आहे. विचारांची देवाण-घेवाण करू लागल्या.

स्त्रियांच्या विचारमंथनातून स्त्री साहित्य जन्माले आहे.

स्त्रीवाद हे स्त्रीमुक्तीचे वाट दाखवते. स्त्रियांचे दुःख, पोत, दीण, वास्तवता, त्यांचे प्रश्न, दुःख मांडू लागले. तिला सर्वक्षेत्रात सहभाग मिळावा, माणूस म्हणून वागणारी नवी व्यवस्था निर्माण व्हावी यासाठी लेखण केले आहे. साहित्य हे समाजप्रबोधनाचे, परिवर्तनाचे, विचारमंथनाचे साधन मानले आहे. स्त्री सृजनाचे अंकूर कापण्याचे काम शतकानुशतके केले. त्यास महामानवांनी बदलून टाकले. त्यांनी स्त्रियांना तुम्हीही माणूस आहे. तुम्हाला पुरूषांच्या

बरोबरीने अधिकार मिळाले पाहिजे. सुखाने जगता आले पाहिजे. त्यांच्यात चेतना, जागृत केली. सर्व क्षेत्रात सहभाग अधिकार हवे आहेत. सर्व संघर्षीतपणे विचार मांडू लागल्या. साहित्याच्या माध्यमातून सर्वांगीण परिवर्तन, बदल घडवून आणणेसाठी साहित्याचे कार्य मानले आहे. स्त्रियांचे साहित्य हे समाजव्यवस्थेची पुनर्मांडणी करण्यासाठी जन्माला आले. साहित्य हे प्रस्थापित व्यवस्थेची पुनर्मांडणी करण्यासाठी लेखनाचा वापर शस्त्रासारखा करू लागल्या. साहित्य हा वैयक्तिक आणि सामाजिक भावभावनच्या, समाजमनाच्या अविष्कार आहे. समाजाच्या गरजेतून वाङ्मय जन्माला येते. स्त्री-पुरूषांच्या मनाची मशागत करण्यासाठी, व्यवस्थेची पुनर्मांडणी करण्यासाठी स्त्री साहित्याचा जन्म झालेला आहे.

भारतातील वरच्या जातीच्या माणसांनी खालच्या शोषित जाती वर्गाच्या आणि स्त्रीवर्गाच्या माणसांवर राज्य करून त्यांच्या कष्टावर जगत आलेला इतिहास आहे. जागतिकरणाचे परिणाम संख्यात्मक आणि गुणात्मकदृष्ट्या परिणाम असमान झाले. भारतात चालत आलेल्या काळच्या मूलभूत साधनांचे वितरण आसमान पातळीदर केले व तेच पुढे चालू ठेवले. त्यांच्या वितरणाचे निकष वर्ण-जात-लिंग हेच राहिले. तर जागतिक व्यवस्थेत असे सर्व प्रस्थापित निकष रद्दबातल ठरवून माणसांच्या विकासाठी लागणाऱ्या ससाधनांच्या वितरणाचा प्रश्न त्यांच्या क्षमतांच्या बाजारमूल्यांशी लावला. अर्थात प्रस्थापित पारंपरिक समाजव्यस्थेनी माणसात क्षमता निर्माणसाठीचे मार्गच बंद केले तर क्षमतजांचेच बाजारीकरण घडवून आणले. लोकशाहीवादी भारताच्या उदारमतवादी व्यवस्थनी म्हणजेच जागतीकीरणाने भारताच्या उदारमतवादी राज्यघटनेत स्वातंत्र्य, समता, न्याय या तत्वांची अमलबजावणी राष्ट्रीय ससाधनांच्यावितरणात करण्याची हमी दिल्यामुळे या देशातल्या वंचितांच्या पदरात अट्टी फळे पडतात न पडतात तेच जागतिकीरणाने त्यावर डल्ला मारून त्यांच्या शोषणाचा मार्ग सुकर केला. म्हणजे स्वातंत्र्याचा अर्थ कळतो न कळतो तोच पुन्हा पारतंत्र्यात जात असल्याचे अनुभव येत आहेत. मात्र प्राप्त परिस्थितीमुळे पारतंत्र्या वसाहतवादाच्या पारतंत्र्यासारखेच नाही तर त्याचा प्रसासच उपराटा आहे. आधीचे पारतंत्र राजकीय मार्गाने आलेले होते परंतु आताचे पारतंत्र्य आर्थिक मार्गाने आलेले आहे. त्यामुळे आपल्याला राजकीय हक्क अबाधित असल्याचा भास होतो. पण तसे तर आले राजकीय हक्क

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

आपल्याहातून निघून ते परकीय आर्थिक शक्तीच्या हातात जात असल्याचे जाणवले त्यातून भारतीयांची शोषणाची जी प्रक्रिया सुरू झाली आहे ती भारताला कडेलोट करणारी आहे. पणभांडवलशाही राष्ट्रांना जास्त मदत करणार आहे." यामध्ये वंचित आणि स्त्रियाही भरडल्या जाणार आहेत.

एकविसाव्या शतकात स्त्रियांचेही शोषण चालूच आहे. थोडसे दोर सैल होत नव्याने आवळले जात आहे. फुले-आंबेडकरी साहित्याच्या प्रेरणेतून स्त्री साहित्यिक अधिक धीट होऊन अभिव्यक्ती करताहेत. शोषण करणारी पारंपारिक मूल्ये नाकारते आहे. आणि भारतीय संविधान निर्मित मूल्ये स्वीकारतेआहे. भारतीय पुरुषांनी तिला निर्धारीत करून शोषण प्रक्रियेत ठेवूनच शोषण करीत राहिले. स्त्रियांकडे पाहण्याचा म्हणावा तसा दृष्टीकोन बदललेला नाही. याचा अनुभव प्रत्येक क्षेत्रात येतो आहे. या काळात स्त्रियां दुय्यम समाजव्यवस्था, पुरुषप्रधान व्यवस्था भारतीय संविधान, निसर्ग नियम, बाईपणाचे अवशेषा स्त्रियांचे प्रत्येक क्षेत्रात बाजारीकरण होणारा व्यापार, तिला मिळणारी प्रतिष्ठा, तिची होणारी घुसमट, घालमेल तिचे करिअर, लैंगिक शोषण, जगात होणारीउलथापालथ, यांसंबंधी होणारी कुचंबना, पेचप्रसंग, बाजारीकरणाचे भान तिला येत जाणारी वैचारिक परिपक्व जमज, बहुसंख्य करून आत्मचरित्रात्मक कविताच अधिक आहेत. या बहुसंख्य कवयित्रीच्या कविता मुक्तछंदाततील आहेत. तसेच फुले-शाहू-आंबेडकरी विचारांशी बांधिलकी ठेवली आहे. स्त्रियांच्या शोषणाची जाणीव तिला येताहेत. परिवर्तन व व्यवस्था बदलण्याचा निर्धार करणाऱ्या कवयित्री आहेत.

२००० नंतरच्या पन्नास एक कवयित्री या काळात निर्माण झाल्या असतील. त्यामध्ये परिर्वनाची, समतेची, मानवतेची, मानव मुक्तीची भाषा, बोलीभाषा बोलणाऱ्या कवयित्रीच्या कविताचे प्रमाण अल्प आहे. त्यामध्ये प्रामुख्याने प्रभा गणोरकर, मलिता अमर शेख, अनुराधा पाटील, आसावरी काकडे, सिलिवलीया कार्व्हाळे, माया पंडित, नलिता गुंडी, वृषाली किनळका, निरजा, प्रज्ञा पवार, ज्योती लाजेवार, माया पंडित, वैदिका कुमार स्वामी, अनुजा जोशी, मनोज यादव, पद्मरेखा धनकर, मिनाक्षी पाटील, अंजली कुलकर्णी, कल्पना दुधाळ, सुजाता महाजन, वंदना महाजन, संजीवनी तडेगावकर, आश्लेषा महाजन, योगिनी सातारकर, संध्या रंगारी, सारिका उबाळे, दानवली पावसकर, योगीनी यावळ, बालिका ज्ञानदेव, संघमित्रा

खंडाटे, सुचिता खल्लाळ, अर्चना डावकर, स्वाती शिंदे, प्रिया जामकर, सुप्रिया आवाटे, विशाखा, शर्मिला रानडे, शरयू असोलकर, शोभा टोकटे, शामल गरुड, सावित्री जगदाळे, अशा डांगे, मनिषा अतुळ, सुनिता झाडे, माधवी डाया कोरेगावकर, संगीता अटबुने, चैताली अहिरे, रंजन कंधारकर, नीलिमा कुलकर्णी, प्रिया धारूरकर, आयना प्रज्ञा भोसले, माया मवर्णास, उषाकिरण आत्राम, यशोधरा गायकवाड, सरिता जांभुळे, पुष्पा कांबळे, ज्योती लांजेवार, अशा थोरात, शांता पवार, प्रभा निकुंभे, लता राजस, प्रतिमा अहिरे, कविता मोरवणकर, उषा हिंगणेकर, कुसुम आलम, विमल गाडेकर, स्मिता नगरकर, उषा अंभोरे, धम्मज्योती शेगोकार, छाया चक्रनारायण, झिगुबाई बोलके, सुरेखा भगत आदी नावे सांगता येतील. कवयित्रीच्या संख्या वाढतेय परंतु गुणात्मक संख्या कमी आहे. यात प्रभा गणोकर, अणुराधा पाटी, मलिका अमरशेख, माया पंडित, पद्मरेखा धनकर, वेदिका कुमार स्वामी, संध्या रंगारी, प्रज्ञा लोखंडे, हिरा बनसोडे, उषा अंभोरे, उषा किरण अत्राम आदी कवयित्रींचा ठसा उमठलेला आहे. रजनी परळेकर, वासती मुजुमकर, नीरजा, आसावरी काकडे आदी कवयित्रीच्या काव्याच्या ठसा अधिक उमटलेला आहे.

या बहुसंख्य कवयित्रीच्या कवितेतून प्रेमाचे अनुभव, आधुनिक स्त्रियांची घुसमट, पारतंत्री व गुलामीचे अनेकांचे घाव झेलणाऱ्या, मनात खोलवर दबलेली, कठोर, कणखर भाषा स्त्री स्वातंत्र्या, स्त्रीत्वाचे आत्मभान, स्त्रियांच्या करूण कहाण्या, भावकविता, स्त्रियांच्या जाणीवा, एकलेपणाची जाणीव, हिंसक विद्रोह, वेश्यांचे जीवनानुभव, स्त्रीमुक्तीच्या नव्या वाटा शोधणारी स्त्रीमुक्तीची वाट तुडवणारी, स्त्रीमुक्तीची नवी संस्कृती निर्माण करणारी, बाजारी वास्तु, भावनाप्रधानता नोकरी करणाऱ्या स्त्रियाचे दुःख, जन्म-मृत्युचा शोध, न्याय मागणारी, अन्यायाविरूद्ध लढणाऱ्या जातीचे चटके, मनातील तगमग, हालचाल, घालमेल, पुरूषी अरेरावीची शिकार झालेल्या स्त्रिया मानवमुक्तीच्या वाटेवर पाऊले टाकत जाणाऱ्या स्वतंत्र विचार करणाऱ्या स्त्रियांचे अनुभवविश्व विसतरलेले आहे. स्त्रियांच्या साहित्यातून वेदना, विद्रोह, नकार, स्वीकार, आत्मशोध, आत्मभान, आत्मजाणीवा, अभिव्यक्ती अविष्कार, स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, सामाजिक न्याय, अधिकार, हक्क मी बाई नव्हे माणूस आहे, नैसर्गिक व मानवनिर्मित अधिकार, भाषा, प्रतिमा, लैंगिक शोषण, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, कला, साहित्य, जाहिरात, चित्रपट

आदी क्षेत्रात तिचा होणारा वापर, तिच्या अब्रूची काढले जाणारे धिंडवडे, स्त्री-पुरुष समानता आदी अनेक मूल्यांसह त्या प्रकट होताहेत. स्त्रीसाहित्याचा जन्मच शोषणाविरोधी आहे. माणूस म्हणून जगण्यासाठी त्यांनी हाती लेखणी घेतली आहे. लोक हो, या कवितेत हिरा बनसोडे म्हणते,

लोक हो,
मी तुमच्या न्यायालयात
फियार्द नोंदवली आहे
आता तरी तुम्ही मला न्याय द्याल का?

हा प्रश्न हिरा बनसोडे यांनी विचारलेला आहे. अजूनही स्त्रियांना माणूस म्हणून वागवले जात नाही. थोडेसे दोर ढिले, सैल होताहेत परंतु अजूनही इथली पुरुषी समाजव्यवस्था तिला माणूस म्हणून नैसर्गिक व मानवनिर्मित अधिकार उपभोगू देत नाही. तिचे शारिरीक, मानसिक, आर्थिक, लैंगिक आदी क्षेत्रात शोषण केले जाते. त्याविरुद्ध आवाज उठवण्यासाठी साहित्य हे समाज प्रबोधनाचे, विचार मांडण्याचे, आणि शोषणमुक्तीचे शस्त्र म्हणून साहित्याकडे पाहिले जाते. नव्हे साहित्य साधनाचा वापर केला जातो. तिचा हा लढा पुरुषी वर्चस्वाविरुद्ध, माणूस म्हणून जगण्यासाठी आहे. स्त्रीमुक्तीची ही चळवळ साहित्याकडे त्यांच्या प्रश्नांचा, समस्यांचा विचार मांडण्याचे साधन म्हणून पाहिले जाते.

प्रभा गणोरकर या कवयित्रीने व्यतीत,विवर्त याकाव्यसंग्रहातून अनेक अंगाने आधुनिक स्त्रियांचे पेच, एकटेपणा, परकेपणा, असुरक्षिता आणिकडेलोटक्षण व्यक्त करते. स्त्रियांच्या अस्वस्थ मानसिकतेचे चित्रण येते, कठोर, कणखर, निर्भिडपणे व्यक्त होते.

आनुराधा पाटीलच्या शुद्धाभावकविता आहेत. वाळूच्या पात्रात मांडलेला खेड २००५ मध्ये प्रसिद्ध झालेला काव्यसंग्रह एक अभागी स्त्री, अगतिक मनुष्य, जन्म-मृत्यूचा जीवघेणा प्रवास, आणि विविध प्रतिमांच्या माध्यमातून व्यक्त होणारी अभिव्यक्ती. स्त्रियांचे दु:ख मांडत त्यातून मुक्त होण्याकडे वाटचाल आहे. सिसिलिया कव्हालो यांच्या सूर्य किरणांत आला आणि पंख, दारातील रांगोळीचे रंग या काव्यसंग्रहातून स्त्रीवादी संवेदना येतात. आधुनिक संस्कृतीत माणूस दगड झाला. माणुसकीचा गहिवर हरवून बसला, मानवीजीवनाचा व्यवहार हा विनाश, ऱ्हासाकडे जातो. हे मांडले. स्त्रियांच्या

वेदना, कैफियती, आयुष्य वेदनामय प्रवास, अत्याचारवादी पुरुष, [illegible] विद्रोह येतो.

नोरजा कवियित्री स्त्रीगणेशा आणि निरर्थकाचे पक्षी हे दोन काव्यसंग्रह आधुनिकतेच्या वळणार जाणारे आहेत. प्रेमखंड निसर्गवाद व्यक्त होते. प्रेमाचे तत्वज्ञान मांडते. तसेच यातनांच्या महापुरात सापडलेली, अनेक अग्निपरिक्षेतून सामोरी जाणारी, सक्तीने शय्यासोबत करणारी, किचन ते बेडरूमपर्यंत तिची अत्यंयात्रा निघते. हे नाकारून नव्या वाटा शोधणारी, स्त्रीमुक्तीच्या वाटेवर पाऊले टाकणारी कवयित्री आहे.

आसावरी काकडे राहटाला पुन्हा गती दिली मी, स्त्री असण्याचा अर्थ आणि उत्तरार्ध हे कवितासंग्रह आधुनिक वळणाने जाणारे आहेत. स्त्रियांची बदलती मानसिकता, स्त्रीवादी जाणीवात तिचे अनेक रूपे, सोशिकता, नवे स्वाभिमानाचे भान, बाईपण, नाकारणारी, स्त्रीवाद हा विवेकशील आहे. मानवी जीवन अंतहीन प्रवास आहे. जन्म-मृत्यू जीवघेणा आहे. त्यांच्या अंतर्बाह्य विश्वातून स्त्रीमुक्तीचा गाभा अभिव्यक्त होतो.

कविता महाजन तत्पुरुष, धुळीचा आवाज, मृगजळांचा मासा आदी काव्यसंग्रहातून स्त्रियांवर होणाऱ्या शरिरीक व मानसिक अत्याचाराचे चित्रण येते. पारंपारिक बंधने झुगारणारी आहे. नव्या वाहाहतीला सामोरी जात कोसळत नव्याने उभारत राहते. तसेच मृगजळाच्या प्रवासमध्ये प्रेमाचे तत्वज्ञान मांडते. विविध जाचातून मुक्तीकडे जाते.

ज्योती लांजेवार यांनी 'अजून वारळ उठलेली नाही' या काव्यसंग्रहातून दलित स्त्रियांवर होणाऱ्या अत्याचाराविरूद्ध आक्रमक होणारी कवयित्री आहे. त्या मनूवादी तत्वज्ञान जाळणारी विद्राही भाषा वापरते. सवर्ण आणि दलित स्त्रियांवर होणारे अत्याचार, बलत्काविरूद्ध लढणारी लढवय्या स्त्री येते. तसेच आधुनिक स्त्रियांचाही बोन्साय होतो. तेही सांगत या शोणमुक्तीच्या वाटेवर पाऊले टाकते. प्रज्ञा पवार ही 'उत्कट जीवघेण्या धगीवर', मी भिडवू पाहतेय सामग्रीशी डोळा, आरपार लयीत प्राणांतिक, दुःखांचा डोबळ समुद्र आदी काव्यसंग्रहातून दलितांवर होणारे अन्याय-अत्याचार, आंदोलने, आंबेडकरवाद, सवर्ण व दलित स्त्री केंद्रस्थानी ठेवून मनातील घालमेल, तगमग व्यक्त करते. अन्याय-अत्याचाराविरूद्ध पेटून उठणारी कविता आहे. [illegible] अर्थांच्या अत्याचाराला बळी पडलेलया अनार्य स्त्रियांचे प्रतिमा [illegible]तात.

Principal
Kholeshwar Mahavidyalaya
Ambajogai, Dist. Beed

Kholeshwar Mahavidyalaya ★ Ambajogai, Dist. Beed